चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	02
संपादकीय	03
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी बैठक	04
शुभकामनाएं	04
एकादशी व्रत का महत्व	10
चतुर्थी और महत्व	10
चतुर्थी और महत्व	13
होलीपुरा की सिद्ध गुफा	16
सामाजिक चेतना	17
कचौरी	20
नवरात्रि और नवार्ण मंत्र	21
कुलदेवी, महाविद्या शक्ति पीठ, मथुरा	22
पर्यटन के छोटे - बड़े ठग	23
शाखा सभा	26
समाज समाचार	27
दिवंगत स्वजन	28

अंक 05
मई 2020, वर्ष - 21

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक
डॉ. कुश चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', 3 रंगरेजन टोला,
छिपेटी, इटावा (उत्तरप्रदेश)
मोबा. 9411938577
ई- मेल :
kshchaturvedi8@gmail.com

व्यवस्थापक
शशांक चतुर्वेदी

वेबसाइट : www.chaturvedi-chandrika.com
www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चन्द्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा इटावा अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
सत्र + वार्षिक सदस्यता शुल्क- 101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक डॉ. कुश चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : sabhapati.mahasabha@gmail.com

बंधुवर सादर पालागन,

होली बाबा की कृपा व स्वामी जी का आशीर्वाद सदा बना रहे।

सर्वप्रथम मैं संपूर्ण समाज व सभी शाखा सभाओं का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपने मुझे जो इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी है। उसे मैं पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से निभाने व आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का हर संभव प्रयास करूँगा। आदरणीय कमलेशजी का कार्यकाल सराहनीय रहा है। कार्यकाल में अधिकतम शाखा सभाओं को संबद्धता प्रदान की गई। नए नए स्थानों पर कार्यकारिणी की बैठकों का आयोजन किया गया। इस तरह के आयोजन समाज की संगठन शक्ति को मजबूती देते हैं। वह स्थानीय बाँधवों को संपूर्ण समाज से जोड़ने में सहायक होते हैं। आपने जनगणना कार्यक्रम की शुरुआत और समाज को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। आपके कार्यकाल में पत्रिका का प्रकाशन पुनः शुरु हुआ। भविष्य में भी मुझे उनका आशीर्वाद व सहयोग मिलता रहेगा। ऐसा मेरा विश्वास है। मैं उन सभी महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने मुझे प्रेरित किया व हर संभव सहयोग किया। इसमें सर्वश्री डॉक्टर सतीश जी, कमलेश जी, त्रिभुवन जी, भरत जी, अविनाश जी, उषा जी, पदम जी, महेश जी, अशोक जी, भरत जी रिषड़ा, शशांक, ज्ञान जी, मुनींद्र जी, आशुतोष जी, करुणेश जी आदि। सभी का नाम लेना संभव नहीं है। समाज का मुझे यही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग व आशीर्वाद आगे भी प्राप्त होता रहेगा। ऐसा मेरा विश्वास है। अंत में मैं आप सभी का हृदय से पुनः आभार व्यक्त करता हूँ।

हमे अभी अनेक क्षेत्रों में कार्य करना है। जिसमे महासभा-शाखा सभाओं के बीच सामंजस्य बैठाना हैं। महासभा में शाखा सभाओं को प्रतिनिधित्व देना। समाज की जनगणना, महासभा के इतिहास का संरक्षण, युवाओं के लिए खेलकूद, सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों का आयोजन। समाज के मेधावी छात्रों व अचीवर्स को सम्मानित किया जाएगा आदि। सभी सभाओं से मेरा अनुरोध है कि वे अपनी सभा की महासभा से संबद्धता का आवश्यक शुल्क जमा कर यथाशीघ्र नवीनीकरण करा लें।

नए दायित्वों को संभालते हुए मुझे आज अपने कुछ दिवंगत प्रिय जनों जिनमें स्व. केदारनाथ जी (दिल्ली), पूर्व सभापति महासभा, स्व. वैध सुरेश चन्द्रजी(मुंबई), पूर्व सभापति, स्व.रविन्द्र नाथ जी (मुंबई), स्व.पृथ्वीनाथ जी (मुंबई), स्व. उपेंद्र नाथ जी (आगरा), स्व. योगेंद्र नाथ जी (कानपुर), स्व. हरिमोहन जी (आगरा), कै. व्यास जी (आगरा), स्व. राकेश जी (दिल्ली), स्व. राधेलाल जी (जयपुर), डॉ.पीयूष जी (लखनऊ), स्व.मेघसिंह जी (लखनऊ), स्व. प्रभात जी (इटावा), स्व.अशोक जी (दिल्ली), स्व. धीरेंद्र जी (मैनपुरी) का स्मरण बार बार आता है। जिनके साथ मुझे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनका स्नेह, सहयोग, आशीर्वाद मुझे सदा प्राप्त हुआ। आप सभी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। वे असमय ही गोलोक प्रस्थान कर गए। वे सदा स्मरण में रहेंगे। उन्हें मेरा सादर प्रणाम।

आप सभी के स्नेह एवं शुभकामनाओं के लिए कृतज्ञ हूँ।

शुभकामनाओं के साथ

सूचना

22 अप्रैल 2013 को पारित एवं स्वीकृत श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान के अनुच्छेद 11(8) द्वारा सभापति को प्रदत्त अधिकार के अनुरूप एक्र 5 सदस्यीय कार्यवाहक सलाहकार मंडल का गठन अधिवेशन होने तक के लिए निम्न प्रकार से किया जा रहा है। मैं संविधान में प्रदत्त अधिकार के अनुसार नव निर्वाचित सभापति के साथ श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी - निर्वतमान मंत्री एवं पदेन प्रकाशक चतुर्वेदी चंद्रिका, श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी - निर्वतमान कोषाध्यक्ष, श्री शशांक चतुर्वेदी - निवर्तमान सह सचिव तथा व्यवस्थापक चतुर्वेदी चंद्रिका, श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी निवर्तमान सह सचिव के साथ एक 5 सदस्यीय कार्यवाहक सलाहकार मंडल का गठन कर रहा हूँ।

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
मो. 9873395001

संपादकीय

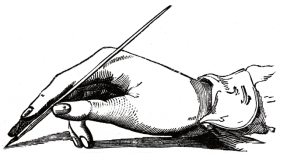

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के एक सौ एकवें वर्ष में सभापति का निर्वाचन निर्विरोध होना एक सुखद संकेत है। नये सभापति डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी का महासभा से लम्बा जुड़ाव है। सभापति के रूप में उनके दीर्घकालिक अनुभव का लाभ समाज को मिलेगा। ऐसा मेरा विश्वास है। हमारा समाज किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहा। सरकारी बैठकें तो ऑनलाइन बहुत समय से हो रहीं हैं किन्तु सामाजिक बैठक ऑनलाइन करने वाला हमारा समाज शायद पहला ही हो।कोरोना महामारी के चलते सम्पूर्ण देश में लॉक डाउन है। महासभा ने अपनी बैठक भी आनलाइन की जिसमें सर्वाधिक सदस्यों की भागीदारी रही। डॉ. प्रदीप जी को कोटिशः बधाई ।

निवर्तमान सभापति श्री कमलेश पाण्डेय जी के साथ काम करना बेहद सुखद रहा। मैं मन से उनके प्रति प्रणत हूँ, क्योंकि आयु, अनुभव और योग्यता में उनसे बहुत कनिष्ठ होते हुए भी उन्होंने संपादकीय गरिमा का मान रखा।

पत्रिका का सम्बल पाठक और लेखक ही हैं। हमें आप लोगों से पत्रिका के कलेवर के अनुरूप लेख/कवितायें आदि की हमेशा आवश्यकता रहती है। किसी भेजी गई सामग्री का न छप पाना लेखक अथवा विषयवस्तु की उपेक्षा कदापि नहीं है। कई बार पत्रिका तैयार होने के बाद मैटर आता है। कई बार हस्तलिखित मैटर इतना अस्पष्ट होता है कि जरा सी त्रुटि में अर्थ का अनर्थ होने की आशंका रहती है। इस स्थिती में मैटर छपने से रह जाता है। आप सब पत्रिका के लिए बहुत महत्वपूर्ण है एक निवेदन है कि जो भी भेजें किसी से टाइप करा लें यदि संभव न हो तो साफ साफ लिखें ताकि सहज समझ आ सके। विशेषांकों की सामग्री इस तरह भेजें की दस से पन्द्रह तारीख तक हमें मिल जरूर जाये। हमारा प्रयास अपनी क्षमताभर रहा है कि पाठकों के मनोनुकूल पाठ्य सामग्री छपे और हर आयु वर्ग की इच्छा का ध्यान रखा जाए। फिर भी कमियाँ रह जातीं है। यह हम जानते और मानते भी हैं।

लॉक डाउन के दौरान घर बैठे टेढ़ी सीधी लकीरें मैं भी खींचता रहा। साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते अपनी मनोदशा को यों व्यक्त किया–

घर सों नीकी जगह न कोय।
भोर भयी चिन्ता नैकहू नहिं पाँय पसारें सोय ।।
सूरज जबहिं मूड़ पै आयो भान भयो तब मोय।
भरी दुपहरी नहाये भैया काया मल मल धोय ।
खीर झोर के भोजन पाये लडुअन में गये खोय।।
मोबाईल सों गप्पें हाँकी का बतरावें तोय ।
ब्यारु मिली चकाचक मनवा गदगद होय।।
घर सों नीकी जगह न कोय ।।

कमोवेश हम सबकी यही स्थिति है। इस समय घर में रहना बहुत आवश्यक है। हाट, बाजार, स्टेशन सब बन्द है। चतुर्वेदी चंद्रिका का डिजिटल अंक हमें नियमित मिल रहा है। यह तब सम्भव है जब हमारे पास भाई शशांक जी जैसा समर्पित और कर्मठ व्यवस्थापक है। शशांक जी को समय पर काम करना और समय से काम ले लेना दोनों में महारथ है। पत्रिका में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। मैं मन से उन्हें कोटिशः साधुवाद देता हूँ। आगामी अंक के लिए हमें आपके लेखादि की प्रतीक्षा रहेगी।

– डॉ. कुश चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी बैठक (19 अप्रैल 2020)

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक दिनांक 19 अप्रैल 2020 को अपने नियत समय अनुसार, कोविड-19 नामक महामारी से उत्पन्न आपात परिस्थिति के कारण परिस्थिति अनुरूप समाजहित में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से डिजिटल बैठक आयोजित की गई। सभापति श्रीकमलेश पांडे जी की अनुमति से सचिव मुनींद्रनाथ जी ने बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। जिसमें विनोद जी (मुंबई) ने सस्वर मंगलाचरण पाठ किया। तदुपरांत मुनींद्र जी, सचिव द्वारा विगत कार्यकारिणी की बैठक की कार्यवाही की रिपोर्ट प्रस्तुत की। जिसे सदन ने सर्वसम्मति से यथावत पारित कर दिया। उसके बाद मुनींद्र जी ने चुनाव समिति की रिपोर्ट कार्यकारिणी के समक्ष प्रस्तुत की। जिसके अनुसार 22 अप्रैल 2013 को पारित श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान के अनुसार 13 अक्टूबर 2019 को ग्राम पुरा, ज़िला आगरा में आयोजित श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्य कारिणी बैठक में सभापति पद के चुनाव (2019-20) के लिए चुनाव संचालन समिति के गठन घोषणा की गयी थी। तदनुसार चुनाव संचालन समिति - श्री कमलेश पाण्डे जी वर्तमान सभापति, श्री मुनींद्र नाथ जी वर्तमान मंत्री, श्री महेश जी, कार्यकारिणी सदस्य, डॉक्टर श्री सतीश जी संरक्षक एवं डॉक्टर के. एन. चतुर्वेदी - चुनाव अधिकारी बनाए गये। चुनाव समिति की प्रथम बैठक 5 नवंबर 2019 को महासभा कार्यालय में सभापति पद के चुनाव कार्यक्रम की तिथियों तथा इसके लिए आवश्यक नियम तथा शर्तों के निर्धारण के लिए आयोजित की गयी। अपरिहार्य कारणों से 5 जनवरी 2020 को कोटा में पूर्व निर्धारित कार्यकारिणी बैठक के स्थगन के कारण सभापति पद के चुनाव के लिए नयी तिथियों के निर्धारण हेतु 11 जनवरी 2020 को चुनाव समिति की बैठक महासभा कार्यालय में की गयी तथा तदनुसार सभापति पद के चुनाव के लिए प्रपत्र, नियम, शर्तें तथा नयी तिथियों निर्धरित की गयी। चुनाव अधिसूचना प्रपत्र, शर्तें, नियमों तथा तिथियों को चतुर्वेदी चंद्रिका के फरवरी 2020 माह के अंक तथा पुनः मार्च 2020 माह के अंक में प्रकाशित किया गया। जो निम्नानुसार है :

प्रपत्र प्राप्ति - 3 से 6 मार्च 2020

प्रपत्र जाँच - 7 मार्च 2020, नाम वापसी के आख़िरी तारीख़ - 14 मार्च 2020, मतपत्र प्रेषण - 17 से 19 मार्च 2020

मत प्राप्ति अंतिम तिथि 17 अप्रैल 2020

मतगणना 18 अप्रैल 2020 तथा चुनाव परिणाम घोषणा 19 अप्रैल 2020.

चुनाव समिति को सभापति पद चुनाव में 2 फरवरी 2020 को नॉएडा में आयोजित कार्यकारिणी बैठक से पारित सदस्यों की अंतिम सूची के अनुसार , इस चुनाव के लिए 61 कुल क्रमागत, 2540 आजीवन तथा 233 सत्र सदस्यों के नाम थे। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार 7 मार्च 2020 को चुनाव समिति की बैठक सभापति पद के प्रत्याशी के लिए प्राप्त प्रपत्रों की निरीक्षण के लिए महासभा कार्यालय में आयोजित की गयी। निरीक्षण के उपरान्त केवल एक ही प्रत्याशी डॉक्टर प्रदीप कुमार चतुर्वेदी के 7 नामांकन प्रपत्र के सेट जो भोपाल, लखनऊ, ग्वालियर, कानपुर, रिषड़ा,नोएडा तथा ग़ाज़ियाबाद / दिल्ली से प्राप्त हुए। इसमें 6 प्रपत्रों के सेट स्वीकृत किए गए।दिनांक 14 मार्च 2020 को सभापति पद के प्रत्याशी के नाम वापसी के अंतिम दिन चुनाव समिति की बैठक महासभा कार्यालय में हुयी। तदनुसार सभापति पद के एक मात्र प्रत्याशी डॉक्टर प्रदीप कुमार चतुर्वेदी के ही प्रपत्र रह जाने के कारण उनको निर्विरोध निर्वाचित चुन लिया गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार , आज 19 अप्रैल 2020 को यह रिपोर्ट चुनाव समिति की ओर से कार्यकारिणी के समक्ष माननीय सभापति श्री कमलेश पाण्डे जी को साभार डॉक्टर प्रदीप चतुर्वेदी के सभापति पद के निर्वाचन की विधिवत घोषणा के लिए प्रस्तुत की जाती है।जिस पर सदन ने सर्वसम्मति से अपनी सहमति प्रकट की। इसके बाद कुछ बंधुओं ने अपने विचार रखें। जिसमें श्री पदम जी (लखनऊ) ने कमलेश जी को एक अच्छे कार्यकाल की समाप्ति की बधाई दी। व भविष्य में उनसे सहयोग की अपेक्षा की। डॉ. प्रदीप जी को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। नीलिमा जी (कानपुर), ऋषभ जी (देहरादून), ज्ञानेंद्र जी (नागपुर), निशीथ जी (गुड़गांव), अंशुमान जी (जयपुर), आलोक जी (प्रयागराज), के बाद अंत में महासभा संरक्षक भरत जी भोपाल में अपने विचार रखते हुए कहा कि वर्तमान कार्यकारिणी का बहुत-बहुत आभार। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन व उत्तरोत्तर निखार हेतु सभापति जी, संपादक जी, व्यवस्थापक जी को बधाई। डॉ. प्रदीप जी के नेतृत्व में समाज उत्तरोत्तर उन्नति करेगा। उनको मेरी शुभकामनाएं व आशीर्वाद। इसके बाद कमलेश पांडे जी सभापति ने अपनी कार्यकारिणी की अंतिम बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मैं समाज का आभार प्रकट करता हूँ। जिसने डॉक्टर प्रदीप जैसे वरिष्ठ व अनुभवी समाजसेवी के निर्विरोध निर्वाचन का मार्ग प्रशस्त किया। उनका निर्विरोध निर्वाचन उनकी निरंतर सेवाओं को समाज का आशीर्वाद व सम्मान है। महासभा की नई शताब्दी में

प्रथम निर्विरोध सभापति चुने जाने पर मैं उन्हें बधाई देता हूँ। डॉक्टर कुश जी का पत्रिका के संपादन हेतु विशेष आभार प्रदीप जी को एक बार पुनः बधाई व शुभकामनाएं। डॉ. कुशजी (संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका) ने कहा कि मुझे चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादन का अवसर देने के लिए कमलेश जी का बहुत-बहुत आभार। डॉ. प्रदीप जी की प्रशासनिक, नेतृत्व व संगठन की क्षमताओं को देखते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

इसके बाद श्री कमलेश पांडे जी ने 3 संरक्षकों के मार्गदर्शन व सहयोग से डॉक्टर प्रदीप जी को सभापति पद की शपथ दिलाई। सभापति के रूप में अपने प्रथम उद्बोधन में डॉ प्रदीप जी ने संपूर्ण समाज का हृदय से आभार व्यक्त किया,और कहा कि आपने मुझ पर जो इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी है। उसे मैं पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से निभाने व आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का हर संभव प्रयास करूँगा। कमलेशजी के कार्यकाल की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि इस कार्यकाल में अधिकतम शाखा सभाओं को संबद्धता प्रदान की गई। नए नए स्थानों पर कार्यकारिणी की बैठकों का आयोजन किया गया। इस तरह के आयोजन समाज की संगठन शक्ति को मजबूती देते हैं। वह स्थानीय बाँधवों को संपूर्ण समाज से जोड़ने में सहायक होते हैं। आपने जनगणना कार्यक्रम की शुरुआत और समाज को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। भविष्य में भी मुझे उनका आशीर्वाद व सहयोग मिलता रहेगा। ऐसा मेरा विश्वास है। मैं उन सभी महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने मुझे प्रेरित किया व हर संभव सहयोग किया। इसमें सर्वश्री डॉक्टर सतीश जी, कमलेश जी, त्रिभुवन जी, भरत जी, अविनाश जी, उषा जी, महेश जी, अशोक जी, भरत जी रिषड़ा, शशांक, ज्ञान जी, मुनींद्र जी, आशुतोष जी, करुणेश जी आदि। सभी का नाम लेना संभव नहीं है। समाज का मुझे यही प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष आशीर्वाद आगे भी प्राप्त होता रहेगा।

ऐसा मेरा विश्वास है। अंत में मैं आप सभी का हृदय से पुनः आभार व्यक्त करता हूँ। आपने अपनी भविष्य की योजनाओं को सभी के साथ साझा किया। जिसमें जनगणना, महासभा के इतिहास का संरक्षण, युवाओं के लिए खेलकूद, सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों का आयोजन। समाज की मेधावी छात्रों व अचीवर्स को सम्मानित किया जाना आदि। मुनींद्र जी द्वारा इतनी बड़ी संख्या में बैठक में बंधुओं की उपस्थिति पर बधाई दी। इसके बाद आपने जो ज़ूम एप के बारे में सभी भ्रांतियों को सिलसिलेवार स्पष्ट किया। विष्णु कांत जी (नोयडा) ने कमलेश जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आपका कार्यकाल अच्छा रहा है। प्रदीप जी को सभापति चुने जाने पर बधाई। समाज के इतिहास के बारे में फैली भ्रांतियों को स्पष्ट करने के बारे में कार्य किए जाने का आग्रह किया। जिससे भविष्य में कोई अनर्गल आरोप व छींटाकशी ना कर सके। अविनाश जी (कानपुर) ने अपनी शुभकामनाएं व आशीर्वाद दिया। इसके बाद उषा जी (भोपाल) ने भी अपनी शुभेच्छा प्रेषित की। संरक्षक राजेंद्र नाथ जी रज्जन ने प्रदीप जी को आशीर्वाद देकर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। हरेश जी (मैनपुरी) ने कमलेश जी को महासभा को केस मुक्त कराए जाने के लिए किये उनके प्रयासों के लिए बधाई दी। बीना जी (हैदराबाद), संजय जी (कानपुर), गणेश जी (लखनऊ) ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

इस डिजिटल मीटिंग के एक नवीनतम प्रयोग के द्वारा समाज के सभी बांधवों को एक ही एप से जोड़ने तथा सफल संचालन के लिये श्री ज्ञानेंद्र जी तथा उनकी टीम का हृदय से आभार व्यक्त किया। सचिव मुनींद्र जी ने डॉ के.एन. चतुर्वेदी (फरीदाबाद) व समस्त चुनाव समिति का आभार व्यक्त किया। सफल व निर्विवाद चुनाव संचालन हेतु व निर्विरोध सभापति के चयन हेतु बधाई दी। बैठक के अंत में विगत समय में दिवंगत बाँधवों के नामों का शोक पत्र पढ़कर व एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। अंत में सचिव मुनींद्र नाथ जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

विवरण प्रस्तुति
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, सचिव
शशांक चतुर्वेदी, सह सचिव

अपील

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान के अनुसार नए सभापति के पदभार ग्रहण करने के साथ ही विगत सत्र का स्वतः समापन हो जाता है। नए सभापति के 19 अप्रैल 2020 को पदभार ग्रहण करने के साथ ही नये सत्र का प्रारम्भ हो गया है। अतः सभी सम्बद्ध शाखा सभाओं से निवेदन है की वे इस सत्र के लिये संबद्धता शुल्क रुपये 251/- यथाशीघ्र महासभा के खाते में जमा कर व आवश्यक जानकारी साझा कर अपनी संबद्धता का नवीनीकरण करवाने की कृपा करें।

शाखा सभाओं के सहयोग से महासभा अपने सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ती में सफल होगी ।

आपके सहयोग का आकांक्षी

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी
सचिव
मो.9871170559

शुभकामनाएं

* किसी सामाजिक संस्था की संभवतः यह पहली वैधानिक मीटिंग होने का गौरव बनाये ज्ञान भाई इस गौरव ध्वजा वाहक के रूप मे स्मरणीय रहेंगे।

–कमलेश पांडेय, संरक्षक

* मैं निवृतमान अध्यक्ष आदरणीय कमलेश पांडे जी और उनकी टीम को साधुवाद तथा बधाई देती हूं। विशेषकर चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक सम्मानीय कुश जी एवं व्यवस्थापक सम्मानीय शशांक चतुर्वेदी जिन्होंने पत्रिका को व्यवस्थित एवं समय अनुसार प्रकाशित किया जो समाज में एक सकारात्मक दिशा की ओर गया। मैं नवनिर्वाचित आदरणीय अध्यक्ष डॉ. प्रदीप जी को बधाई देती हूं कि पूर्व की टीम द्वारा जो सकारात्मक दिशा समाज को दी गयी। जिसका परिणाम अध्यक्ष जी निर्विरोध चुनाव होना है। पुनः बधाई।

– उषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल

* श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के निर्विरोध सभापति चुने जाने पर डॉ प्रदीप चतुर्वेदी होलीपुरा नई दिल्ली को हार्दिक बधाइयाँ।

गौरव मय उपलब्धि पर अभिनंदन श्रीमान,
प्रभु की बरसे कृपा नित, बड़े मान सम्मान।।
शुभकामनाओं के साथ

– भरत चतुर्वेदी, रिषड़ा

* महासभा के निर्विरोध नव निर्वाचित अध्यक्ष डा० प्रदीप चतुर्वेदी जी (होलीपुरा/नई दिल्ली) ने निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश पांडे जी (मैनपुरी/नोयडा) से अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण किया। कमलेश पांडेजी को उनकी सेवाओं के लिये बहुत–बहुत साधुवाद, आर्थिक कारणों से स्थगित चतुर्वेदी चंद्रिका पत्रिका के पुनः व निरंतर प्रकाशन हेतु आभार व प्रदीप जी को एक चिरस्मरणीय कार्यकाल के लिये शुभकामनायें। होली बाबा व स्वामी जी अपने इस प्रिय लाल पर कृपा बनाये रखे।

– शशांक चतुर्वेदी, भोपाल

* नव निर्वाचित सभापति ने ऑनलाइन कार्यभार ग्रहण किया। सभापति का चयन निर्विरोध पूर्ण हुआ। डिजिटल बैठक के संचालन में भाई ज्ञानेंद्र (नोएडा) को बधाई। पूर्व सभापति श्री कमलेश पांडे जी के कार्यकाल की उपलब्धियों की बधाई व नवनिर्वाचित सभापति डॉ प्रदीप जी को शुभकामनाएं।

– डॉ ऋषभ चतुर्वेदी, देहरादून

* जिस संस्था के अध्यक्ष, मंत्री तथा संयोजक निपुण होंगे। उसकी टीम तो सदा उसके साथ एक आवाज पर खड़ी है। जैसा कि आज देखने को मिला आदरणीय कमलेश पांडे जी, डॉ प्रदीप जी, मुनींद्र भाई साहब भाई, ज्ञान जी व समस्त टीम का मैं दिल से धन्यवाद प्रेषित करता हूं।

– विपिन चतुर्वेदी, लखनऊ

* शताब्दी वर्ष में अभिनव प्रयोग निर्विरोध सभापति चयन डिजिटल बैठक, सम्पूर्ण समाज गौरवान्वित, सम्पूर्ण टीम गौरवान्वित

– अंशुमान चतुर्वेदी, जयपुर

* कमलेश भाई साहब को विघ्न रहित कार्यकाल की बधाई एवं निर्विरोध सभापति डा० प्रदीप जी के रूप में शताब्दी वर्ष में प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मुनीन्द्र भाई साहब और भाई ज्ञानेंद्र जी के अथक प्रयासों का परिणाम डिजिटल युग में पूर्ण रूप से महासभा का प्रवेश हुआ। महासभा के शताब्दी वर्ष में डाक्टर प्रदीप भाई साहब के नेतृत्व में नये आयामों को स्थापित होंगे।

– प्रदीप चतुर्वेदी (लालन), सुमंत चतुर्वेदी, मधुकर पाठक,पुनीत चतुर्वेदी (आगरा)

* आदरणीय कमलेश जी का अध्यक्ष का कार्यकाल अति गौरववान रहा। डॉ प्रदीपजी का निर्विरोध चुना जाना इसकी एक उपलब्धि है। हालांकि डॉ साब का व्यक्तित्व भी सर्वोपरि है। इस चुनाव की प्रक्रिया से न सिर्फ काफी धन की बचत हुई, बल्कि किसी को कोई व्यथा नही हुई। चुनाव हारने वाला सदा व्यथित होता है। सभी लोग खुश हैं। मैं अपनी एवं मुम्बई सभा की तरफ से दोनों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ। डॉ साब हम सब यथा संभव आपके साथ है।

– सुभाष चतुर्वेदी,अध्यक्ष, पंकज चतुर्वेदी, सचिव,मुम्बई सभा

* इन विषम परिस्थितियों में भी मीटिंग हो सकी और वह भी बहुत ही सुखद अनुभव के साथ। तदर्थ ज्ञानेन्द्र जी व उनकी टीम को बहुत बहुत बधाई। सभी पूर्व अध्यक्षों व श्री कमलेश पांडे जी ने बडी सुहावनी शुभ संस्कारों से परिपूर्ण परंपरा हमें दी है। वर्तमान के सशक्त कंधों पर इसके यश व गौरव को संवर्धित करने पूर्व संस्कारों को पुनः परिभाषित व संगठित करने का दायित्व है। हमारा समाज निर्विरोध अध्यक्ष चुन सकता है यह कहते सुनते

व बताते समय हम कितना गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। वह शब्दों के परे है। डा. प्रदीप जी को निर्विरोध अध्यक्ष पद का नव दायित्व ग्रहण नयी तकनीक से करने के लिए सादर बहुत बहुत बधाई और अनंत शुभकामनाएं।

– **बीना मिश्रा,** हैदराबाद

* Digital India ke madhyam se ayojit Mahasabha ke navnirvachit President shri Pradeep Chaturvedi ke shapathgrahan samahroh ke safal ayojan ke liye Gyanendraji badhai ke patra hain. Pradeep bhai sahab ko bahut bahut shubhkamnayen.Aaj ka ye safal prayog aagami karykarini karyakal ke dauran bahut hi pravawshali bhumika nibhayega aisa mera manana hai.

– **Mukesh chaturvedi,** Risra

* आदरणीय भाई साहब सादर पालागन। ये सब आपके सफल प्रयास का प्रतिफल है। बधाई शुभकामनाओं के असली हक़दार तो आप है। हम सभी ने सिर्फ आपका साथ दिया। एक बार पुनः आदरणीय कमलेश जी के सफल और स्मरणीय कार्यकाल और डॉ. साहब (नव सभापति) को निर्विरोध चयनित होने पर सभा ओर समाज को गतिमान करने के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि डॉक्टर साहब के सफल नेतृत्व में अपने समाज को चहुँमुखी एवँ बहुमुखी विकास की नयी दिशा मिलेगी। पालागन।

– **अभय राज चतुर्वेदी,** गुरुग्राम

* आदरणीय प्रदीप भाई साहब, मुनीन्द्र भाई साहब एवं भाई ज्ञानेंद्र जी को डिजिटल मीटिंग के माध्यम से महासभा के अविस्मरणीय शपथग्रहण समारोह के आयोजन के लिए बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं। प्रयागराज के समस्त बांधवों की ओर से डॉक्टर प्रदीप जी को निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक शुभकामनाएं।

– **आलोक चतुर्वेदी,** प्रयागराज

* डॉ0 प्रदीप चतुर्वेदी जी को अध्यक्ष पद पर पद भार ग्रहण करने पर बहुत बहुत अभिनंदन और शुभकामनाएं। कमलेश भाई साहब को संरक्षक होने की एवं सफल कार्यकाल की बधाईयाँ।डिजिटल मीटिंग के सफल संचालन के लिये ज्ञानेन्द्र जी को बधाई। सादर पालागन।

– **दिलीप सिकंदरपुरिया,** लखनऊ

* सभी को सादर पालागन, डॉक्टर प्रदीप जी को निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई। ज्ञानेन्द्र जी का सादर आभार। आदरणीय कमलेश मामाजी आपके कार्यकाल में बहुत कुछ सीखने को मिला। सादर आभार एवं अभिवादन ।

– **पूनम चतुर्वेदी,** लखनऊ

* वर्ष 1920 में स्थापित श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के 100 वें वर्ष में डॉ. प्रदीप जी के निर्विरोध सभापति निर्वाचित होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें। आदरणीय श्री कमलेश जी पाण्डेय को उनके सफल कार्यकाल के लिए अभिनन्दन।

– **लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी,** गाजियाबाद

* Well began is half done! as the saying goes. It was a very well planned, perfectly executed, digital meeting. Gyanendra bhai and Munindra deserve our special thanks and gratitude for making it possible. Every one participated with full enthusiasm, interest and Sincerity. Congratulations to Dr Pradeep for a well deserved, well earned position as the President of the Chaturvedi Maha Sabha. Hope his tenure will see lot of progress, innovation and meaning full steps to make us more strong.

– **Dr. nishith chaturvedi,** gurgram

* बहुत बहुत आभार ज्ञानेंद्र जी इस नए अभिनव प्रयोग का। डॉ. साहव को बहुत बहुत बधाई। उनके गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व में हम सब उनके साथ कार्य करने को संकल्पित है।

– **कैलाश चतुर्वेदी,** कासगंज

* महासभा के इतिहास में प्रथम DIGITAL MEETING आयोजित करने के लिए आदरणीय ज्ञानेन्द्र भाईसाहब, मुनीन्द्र भाईसाहब एवं समस्त टीम को साधुवाद। हम सभी गौरवान्वित हैं कि हम इसके साक्षी बने।

– **गोविन्द चतुर्वेदी,** जयपुर

* डॉ प्रदीप जी को बहुत–बहुत बधाई।

– **सरिता चतुर्वेदी,** मुंबई

* नव निर्वाचित महासभा अध्यक्ष भाई डा0 प्रदीप चतुर्वेदी, होलीपुरा ने निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश पांडे जी मैनपुरी से अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण किया। कमलेश पांडेजी को उनकी सेवाओं के लिये बहुत–बहुत साधुवाद व प्रदीप

भाई को एक चिरस्मरणीय कार्यकाल के लिये शुभकामनाएं।

– **अविनाश चतुर्वेदी,** कानपुर

* 21वी सदी की शुरुआत सफल डिजिटल मीटिंग व निर्विरोध सभापति चुने जाने पर डॉ प्रदीप जी को बधाई

– **नीरज चतुर्वेदी,** हिंडौन

* Hearty congratulations and best wishes to Dr. Pradeep ji.From first day Dr Pradeep has initiated introducing new measures in working of mahasabha. Digital meeting and oath ceremony is testimony to bright future.

– **Sudhir chaturvedi,** Noida

* आदरणीय डॉ साहब को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित होने की हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई। महासभा के अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध निर्वाचन से समाज में एक उत्कृष्ट परम्परा का मार्ग प्रशस्त हुआ है, जो प्रशंसनीय है। नवनिर्वाचित अध्यक्ष का यह कार्यकाल समाजहित के उन उत्कृष्ट मानदंडों को स्थापित करे। जो समाज के सौ वर्षों के इतिहास में अग्र–गणनीय हो। ऐसी कामना करता हूँ।

– **बिपिन पांडेय,** ग़ाज़ियाबाद

* डॉक्टर प्रदीप चतुर्वेदी जी को अध्यक्ष पद पर पद भार ग्रहण करने पर बहुत बहुत बधाई और शुभकामनाएं। कमलेश भाई साहब को संरक्षक होने की एवं सफल कार्यकाल की बधाई ।डिजिटल मीटिंग के सफल संचालन के लिये ज्ञानेन्द्र जी को बधाई। सभी को पालागन।

– **प्रवेश चतुर्वेदी,** कानपुर

* Congratulation Dr. Pradeep Bhaisahab as President of our Chaturvedi Mahasabha

– **Sudhanshu chaturvedi**

ऑनलाईन कार्यकारिणी बैठक

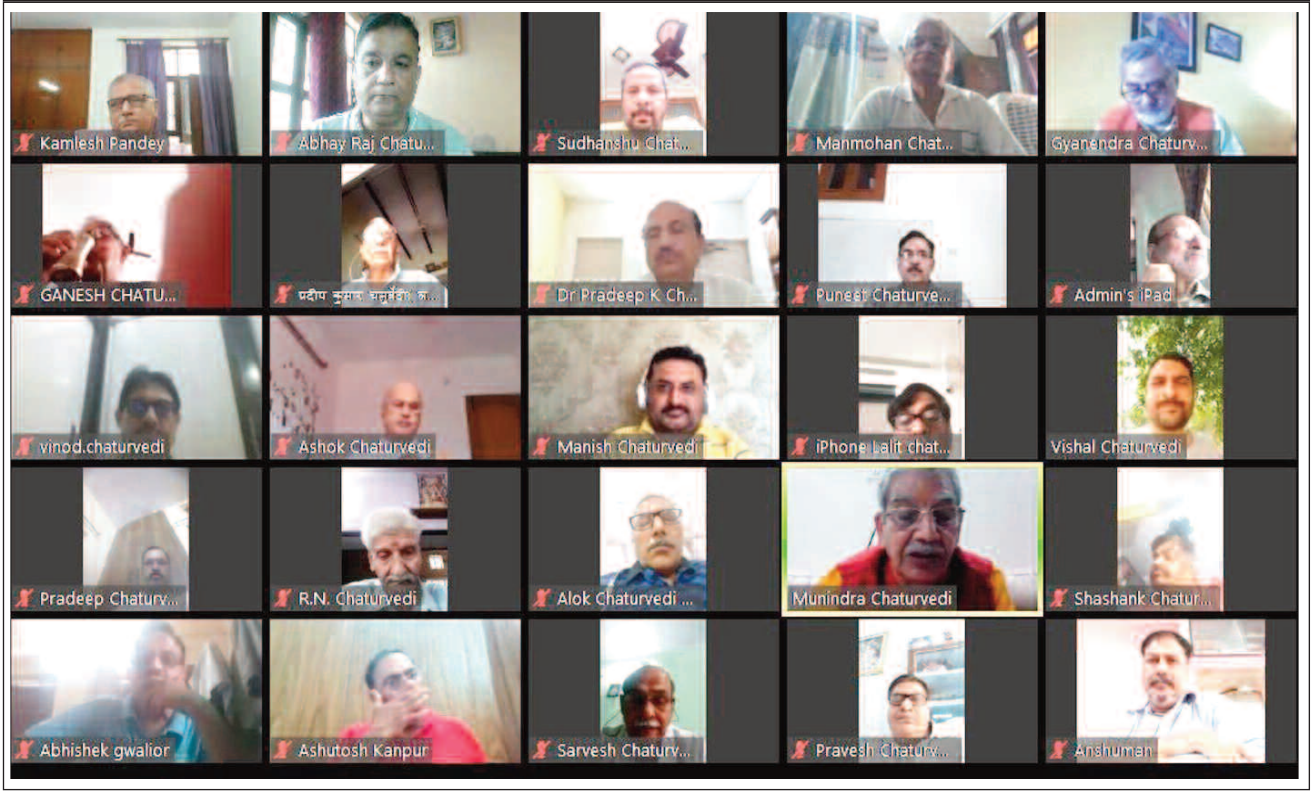

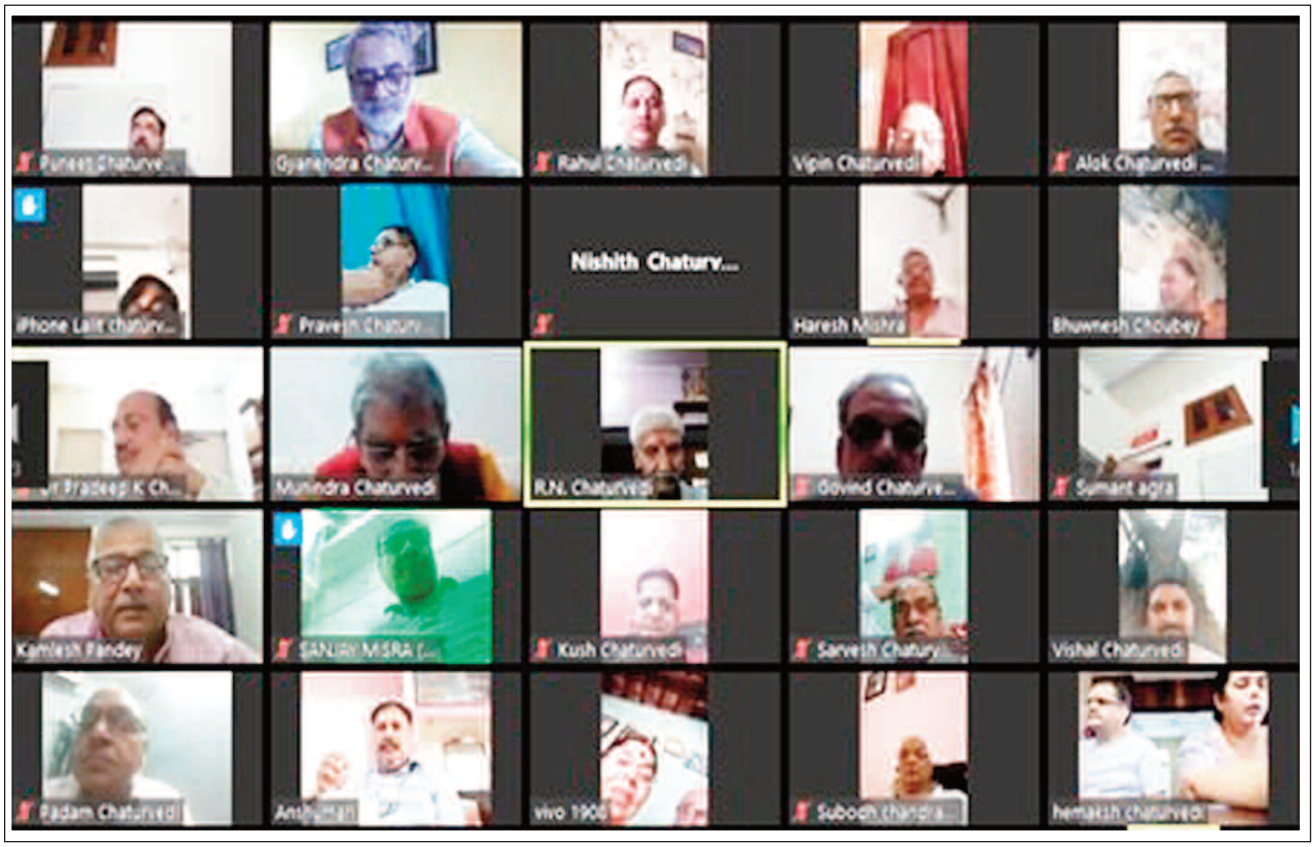

Puneet Chaturve...
Gyanendra Chaturv...
Rahul Chaturvedi
Vipin Chaturvedi
Alok Chaturvedi ...
iPhone Lalit chaturv...
Pravesh Chaturv...
Nishith Chaturv...
Haresh Mishra
Bhuwnesh Choubey
Munindra Chaturvedi
R.N. Chaturvedi
Govind Chaturve...
Sumant agra
Kamlesh Pandey
SANJAY MISRA (...
Kush Chaturvedi
Sarvesh Chaturv...
Vishal Chaturvedi
Padam Chaturvedi
vivo 1906
Subodh chandra...
hemaksh chaturvedi

GANESH CHATU...
Kamlesh Pandey
Admin's iPad
vinod chaturvedi
Ashok Chaturvedi
Manish Chaturvedi
Shiv Chaturvedi ...
Shashank Chatur...
Abhishek gwalior
Dileep Chaturvedi
Madan Chaturvedi
Chetan
Abhay Raj Chatu...
Pradeep Chaturv...
Poonam Chaturv...
Pankaj Mumbai
Ashutosh Kanpur
Vipin Chaturvedi
Lokendra Nath C...
Mukesh Chaturv...
Manmohan Chat...
Madhukar Patha...
Neeraj chaturve...

एकादशी व्रत का महत्व

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

हमारी भारतीय संस्कृति में हिंदू धर्म में एकादशी या ग्यारस एक महत्वपूर्ण तिथि है। इस व्रत की की हमारे हिंदू धर्म में बड़ी महत्ता है। यही कारण है हिंदू धर्मावलंबी बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ एकादशी का व्रत करते हैं। एकादशी देवी थी जो भगवान विष्णु के द्वारा उत्पन्न की गई थी। भगवान विष्णु के प्रकट करने के कारण ही एकादशी के व्रत में भगवान विष्णु की पूजा की जाती है।

एकादशी व्रत क्या है

एक ही दशा में रहते हुए अपने आराध्य देव का पूजन एवं वंदन करने की प्रेरणा देने वाला व्रत एकादशी व्रत कहलाता है। पद्म पुराण में भी एकादशी महा पुण्य प्रदान करने वाली उल्लेखित है, कहा जाता है जो व्यक्ति इस व्रत को करता है उसके पितृ तथा पूर्वज बुरी योनी को त्याग स्वर्ग लोक चले जाते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं। हिंदू पंचांग की 11वीं तिथि को एकादशी कहते हैं। एकादशी संस्कृत भाषा से लिया शब्द है। यह माह में 2 बार आती है। पूर्णिमा के बाद तथा अमावस्या के बाद। इस तरह से एकादशी साल में 24 होती हैं। लेकिन अधिक मास को मिलाकर इनकी संख्या 26 हो जाती है।

महत्व

पुराणों के अनुसार एकादशी को हरी दिन और हरी बासर भी कहते हैं।यह व्रत वैष्णव तथा गैर वैष्णव भी करते हैं ऐसा कहा जाता है एकादशी का व्रत हवन यज्ञ वैदिक कर्मकांड आज से अधिक फल देता है स्कंद पुराण में भी इसके महत्व का वर्णन है।

नियम

एकादशी व्रत करने के नियम बहुत सख्त होते हैं व्रत करने वाले को एकादशी तिथि से पहले सूर्यअस्त से लेकर एकादशी के अगले सूर्योदय तक उपवास करना पड़ता है अर्थात दशमी के दिन सूर्य अस्त के बाद से व्रत शुरू हो जाता है दशमी के दिन भी कुछ नियम पालन करने पड़ते हैं उदाहरण स्वरूप मांसाहार नहीं किया जाता। प्याज, मसूर की दाल, शहद का सेवन भी नहीं किया जाता।

एकादशी के दिन सुबह दातून का इस्तेमाल ना करें। इसके स्थान पर नींबू, जामुन या आम के पत्ते चबाकर उंगली से दांत साफ करें। इस दिन पत्ते तोड़ना वर्जित है। गिरे पत्ते प्रयोग में लाए जाते हैं। स्नानादि के पश्चात मंदिर जाकर गीता का पाठ करें तथा

ओम भगवते वासुदेवाय मंत्र का जाप करें तथा यथाशक्ति दान करें। दूसरे दिन अर्थात द्वादशी के दिन आम दिनों की तरह कार्य करें। सुबह उठकर भगवान विष्णु की पूजा करें तथा उसके पश्चात सामान्य भोजन लेकर व्रत समाप्त करें। इस बात का ध्यान रखें कि त्रयोदशी लगने से पहले ही व्रत का पारण कर ले।

भोजन

एकादशी के दिन व्रती ताजे फल में भी चीनी, कूटू, नारियल, जैतून, दूध, अदरक, काली मिर्च, सेंधा नमक, आलू, साबूदाना और शकरकंद का प्रयोग कर सकते हैं।

एकादशी को वर्जित कार्य

वृक्ष के पत्ते ना तोड़े। बाल नहीं कटवाए। कम बोले यदि संभव हो तो मौन करें। चावल का सेवन वर्जित है। किसी का दिया हुआ अन्न खाएं। फलाहार में गोभी, शलजम, पालक का सेवन ना करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। वर्ष भर में होने वाली 24 एकादशी को हमारे सनातन हिंदू धर्म में अलग-अलग नाम से जाना जाता है, तथा इनके अलग-अलग महत्व भी हैं। पूजन विधि में भी थोड़ा सा फर्क होता है।

एकादशियों के नाम

पुत्रदा एकादशी : पुत्रदा एकादशी को भगवान विष्णु का पूजन किया जाता है। इस दिन केसर, केला तथा हल्दी का दान दिया जाता है। चावल खाना पूरी तरह से वर्जित है। साल में दो पुत्रदा एकादशी होती हैं। पौष माह में और श्रावण शुक्ल पक्ष मैं संतान प्राप्त हेतु इसका व्रत किया जाता है। साथ ही में जिस व्यक्ति का विवाह ना हो रहा हो जल्दी विवाह योग चाहते हो तो भी इस का व्रत किया जाता है।

षटतिला एकादशी : षटतिला एकादशी माघ कृष्ण एकादशी को कहते हैं। हरि विष्णु तथा कृष्ण की आराधना इस दिन होती है। दरिद्रता दुर्भाग्य दूर करती है, तथा इस दिन तिल का छह प्रकार से उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे षटतिला एकादशी कहते हैं।

जया एकादशी : माघ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को जया एकादशी कहते हैं। भगवान विष्णु की पूजा तथा विष्णु मंत्रों का 108 बार जाप तुलसी की माला से किया जाता है, तो फलदायक होता है। भगवान विष्णु की शालिग्राम के रूप में पूजा की जाती है

इस दिन यह कार्य वर्जित हैं, पान ना खाएं। निंदा या आलोचना से बचें। स्त्री साथ वर्जित है।

विजया एकादशी : यह एकादशी फागुन मास के कृष्ण पक्ष को होती है। जैसा किसका नाम है। यह शत्रु पर विजय दिलाती है जब आप भयंकर शत्रुओं से घिरे हो और पराजय सामने दिख रही हो। उस समय विजया एकादशी करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है। कहा जाता है प्राचीन समय में बहुत से राजाओं ने विजया एकादशी का व्रत कर शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी। पूजा में 7 प्रकार के धान्य तथा घट की स्थापना होती है। गेहूं, उड़द, मूंग, चना, जौ, चावल और अरहर बिछाकर, उस पर घट रख विष्णु की पूजा की जाती है।

आमलकी एकादशी : फागुन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी आमलकी एकादशी कहलाती है। भगवान विष्णु के साथ शिव की पूजा की जाती है। इसे रंगभरनी ग्यारस भी कहते हैं। जीवन में सुख संपन्नता प्रदान करने वाली एकादशी है। आंवले के पेड़ का पूजन करें। पेड़ की 27 या 7 या 9 आँवला दान करे।

पाप मोचनी एकादशी : यह चैत मास की कृष्ण पक्ष को मनाई जाती है इस का व्रत करने से मनुष्य के पाप तथा संकटों से छुटकारा मिल जाता है। इस दिन भगवान विष्णु के चतुर्भुज रूप की पूजा की जाती है।

कामदा एकादशी : चैत मास की शुक्ल पक्ष को जो एकादशी आती है। कामदा एकादशी कहलाती है। इस एकादशी का व्रत करने से ब्रह्म हत्या, पिशाचत्व दोषों का नाश होता है। यह चैत्र मास की प्रतिपदा के बाद पड़ती है और मनुष्य के मनोरथ पूरे करती है। इसका उल्लेख बराहपुराण में भी है। भगवान विष्णु के साथ कृष्ण की पूजा भी की जाती है।

वरुथनी एकादशी : वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को वरुथिनी एकादशी कहते हैं। यह सौभाग्य प्रदान करने वाली होती है। कहा जाता है 10 सहस्त्र वर्ष तक तप करने का जो फल प्राप्त होता है। वह वरुथिनी एकादशी व्रत करने से ही प्राप्त हो जाता है।

मोहनी एकादशी : वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मोहिनी एकादशी कहते हैं। मोहिनी एकादशी का व्रत करने से मनुष्य जाल से छूट जाता है तथा मनुष्य के जो पाप हैं उनसे भी उसे छुटकारा प्राप्त हो जाता है इसलिए मोहिनी एकादशी के व्रत का बहुत महत्व है।

अपराएकादशी : जेठ मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अपरा एकादशी कहते हैं। इसे अचला एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। साथ ही इसे भद्रकाली, जल क्रीडा एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी की पूजा में चंदन श्रीखंड तुलसी दल गंगाजल तथा फल का प्रयोग करना आवश्यक है तथा उसी का प्रसाद लगाया जाता है। यह व्रत कष्टों से छुटकारा दिलाता है सुख मिलता है धनसंपदा मिलती है।

निर्जला एकादशी : जेठ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी निर्जला एकादशी कहलाती है जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है इस दिन बिना जल के व्रत किया जाता है।

दान में वस्त्र छाता फल भी दान दिए जाते हैं। इसे भीमसेनी एकादशी भी कहते हैं। इसका व्रत दीर्घायु तथा मोक्ष प्राप्त करने के लिए किया जाता है। भगवान विष्णु की आम या गुलाब शरबत का भोग लगा पीले फूल चढ़ाकर एकादशी का व्रत करते हैं। एक मटके में जल या शरबत भरकर पंखा दान करने का अधिक महत्व है।

योगनी एकादशी : आषाढ़ माह की कृष्ण पक्ष की एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस योग योगिनी एकादशी का व्रत का फल 88000 ब्राह्मणों को भोजन कराने के बराबर प्राप्त होता है।इसदिन अन्न दान किया जाता है ।यह व्रत कल्पतरू के समान होता है।

देवशयनी एकादशी : यह आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को कहते हैं इसका विशेष महत्व है। इसे हरि शयनी एवं पद्मा एकादशी भी कहते हैं। इसी दिन से चतुर्मास का प्रारंभ होता है। विष्णु सहस्त्रनाम तथा पुरुषसूक्त का जाप करना चाहिए भगवान विष्णु भी 4 मास तक पाताललोक में निवास करते हैंम तथा क्षीरसागर की अनंग सैया पर शयन करते हैं। इस दिन से शुभ व मांगलिक कार्यों पर विराम लग जाता है।

कामका एकादशी : श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को कामका एकादशी कहते हैं इस एकादशी का व्रत करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है भगवान शिव तथा विष्णु का पूजन इस दिन किया जाता है। इस व्रत को करने का फल अश्वमेघ यज्ञ के समान प्राप्त होता है। भगवान को पीले रंग के वस्त्र आज के दिन अर्पित करना चाहिए।

श्रावण पुत्रदा एकादशी : सावन शुक्ल एकादशी का नाम श्रावण पुत्रदा एकादशी है।

अजा एकादशी : भादो महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी को अजा एकादशी कहते हैं इसे कामिका या अन्नदा के नाम से भी जाना जाता है। इसकी खास बात यह है कि एकादशी के पूरे दिन भगवान विष्णु की मूर्ति के सामने दीपक जलाया जाता है। दीपक द्वादशी को हटाए तथा भगवान विष्णु तथा लक्ष्मी की पूजा होती है। यह बात करने से सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं।

परिवर्तनी एकादशी : भाद्रपद की शुक्ल की एकादशी को परिवर्तन एकादशी कहते हैं इसे जयंती एकादशी भी कहते हैं। इस दिन भगवान विष्णु के वामन रूप की पूजा की जाती है तथा वामन रूप की पूजा करने का फल तीन लोको की पूजा करने का फल प्राप्त होता है।

इन्दिरा एकादशी : पित्र पक्ष में पढ़ने वाली एकादशी को इंदिरा एकादशी कहते हैं। इस दिन पितरों के लिए पिंडदान किया जाता है। पिंडदान की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। भगवान विष्णु को पीले फूल चढ़ाए जाते हैं। उड़द की दाल की खादय सामग्री का प्रसाद लगाया जाता है।

पदमनी एकादशी : पुरुषोत्तम मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को पद्मिनी एकादशी कहते हैं मलमास में आने के कारण इसे पुरुषोत्तम एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। मलमास में वैसे भी दान दक्षिणा का महत्व बहुत अधिक होता है।

परम एकादशी : अधिक मास में पढ़ने वाली एकादशी को परमा एकादशी कहते हैं। इस एकादशी को भी सभी प्रकार के दान महत्वपूर्ण होते हैं।

पापंकुशा एकादशी : अश्विन मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को पाप कुशा एकादशी कहते हैं। भगवान विष्णु के पदम नाम रूप की पूजा की जाती है। इस दिन हाथी को प्रेम रूपी अंकुश से भेदने के कारण रात में भगवान विष्णु की मूर्ति के पास सोना चाहिए इस दिन मौन रखने का विधान है।

रमा एकादशी : इसे रमा एकादशी भी कहते हैं। विष्णु तथा मां लक्ष्मी दोनों की पूजा की जाती है यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को रमा एकादशी कहते हैं। माता लक्ष्मी से संबंधित होने कारण ही इसका नाम रमा एकादशी पड़ा।

देवोत्थान एकादशी : इसे देवउठनी तथा देव प्रबोधनी, हरि प्रबोधिनी एकादशी के नामों से जाना जाता है। इस दिन तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ हुआ था या एकादशी की खास बात यह है कि इसके बाद ही शादी आज के मुहूर्त प्रारंभ हो जाते हैं। आदि पुराण के अनुसार बुद्धि तथा शांति प्रदाता संतान दायक एकादशी होती है। भगवान विष्णु चार मास के शयन के बाद आज ही उठते हैं। घर घर में देवोत्थान की पूजा की जाती है।

उत्पन्ना एकादशी : यह साल की सबसे बड़ी एकादशी है। यह अगहन मास की कृष्ण पक्ष की है। एकादशी का व्रत उत्पन्ना एकादशी से प्रारंभ होता है। जो लोग एकादशी का व्रत रखना चाहते हैं। वह इसी एकादशी से प्रारंभ होता है। बीच की एकादशी से प्रारंभ नहीं किया जाता है। एकादशी एक देवी थी जिनका जन्म विष्णु जी से हुआ था अर्थात विष्णु जी से उत्पन्न हुई थी। इसलिए इसे उत्पन्ना एकादशी के नाम से जाना जाता है।

मोक्षदा एकादशी : मुजरा एकादशी के दिन विष्णु भगवान की पूजा के साथ कृष्ण की पूजा भी होती है। भगवान विष्णु की पूजा तुलसी की मंजरी से की जाती है। गीता का पाठ किया जाता है। ऐसा करने से पापों का शमन होता है तथा इस एकादशी का व्रत करने से गंगा स्नान का फल भी प्राप्त होता है।

चतुर्थी और महत्व

- चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

हम सबको विदित है कि गणेश जी हमारे 'प्रथम पूज्य' देवता हैं। इन्हें शंकरजी आदि देवी-देवताओं का 'प्रथम पूज्य'का आशीर्वाद प्राप्त है। 'प्रथम पूज्य'आशीर्वाद के पीछे कई कथाओं का भी वर्णन पढ़ा और सुना गया है। इनकी पूजा का दिन बुधवार माना गया है। इस दिन को लोग बुध-विनायक कहकर भी मानते हैं। इनकी विशेष पूजा-अर्चना माह में पड़ने वाले दो चतुर्थी को मानते हैं। हिंदू पंचांग के अनुसार, एक मास में दो बार चतुर्थी आती है और एक वर्ष में 24 चतुर्थी होती हैं। अधिक मास होने से इनकी गिनती 26 हो जाती है। यह चतुर्थी कृष्ण पक्ष के बाद चतुर्थ दिन और शुक्ल पक्ष के बाद चतुर्थ दिन को पड़ती है। शुक्ल पक्ष के बाद पड़ने वाली चतुर्थी को विनायक-चतुर्थी और कृष्ण पक्ष के बाद आने वाली चतुर्थी को संकट-चतुर्थी कहते हैं। गणेश चतुर्थी हिंदुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्यौहार भारत के विभिन्न भागों में मनाया जाता है, किंतु महाराष्ट्र में यह बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। पुराणों के अनुसार भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश जी का जन्म हुआ था। यह चतुर्थी हरितालिका तीज के दूसरे दिन होती है। हर चतुर्थी का अपना महत्व होता है। ऐसी मान्यता है कि गणेश चतुर्थी की पूजा और व्रत करने से परिवार में आने वाली हर विपदा को विघ्नहर्ता दूर करते हैं। इस दिन भगवान श्री गणेश के साथ चंद्र देव की पूजा करने का भी विधान है। कहते हैं ऐसा करने से व्यक्ति के कई जन्मों के पाप कट जाते हैं।

माह की 12 चतुर्थियों के पूजन - नियम

गणेश जी आदिकाल से पूजित रहे हैं। वेदों में पुराणों में गणेश के संबंध में अनेक लीला कथाएं प्रचलित हैं। विभिन्न प्रकार की इनकी पूजा पद्धतियां पढ़ने और देखने को मिलती है। उनके नाम से गणेश–पुराण भी सर्व सुलभ है। देवता कोई भी हों पूजन कोई भी हो, गणेश पूजन के बगैर सब निरर्थक हो जाता है।

प्रथम पूजित नाम प्रभाऊ ।। मृदुल पुराण में "वक्रतुंडाय हुम" जप का निर्देश दिया गया है। इस जप के साथ पूजा पाठ करने से गणेश जी को प्रसन्न किया जा सकता है।

12 माह की चतुर्थी पर गणेश पूजन

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश पूजन के साथ चंद्रमा पूजा करके व्रत तोड़ा जाता है। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को व्रत कर चंद्र दर्शन एवं पूजन कर ब्राह्मण भोजन कराने से अर्थ, धर्म ,काम मोक्ष सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

पहला – चैत्र माह की चतुर्थी पर, गणेश पूजन व्रत कर एवं चांद पूजकर, ब्राह्मण को सुवर्ण दक्षिणा देने का विधान माना जाता है।

दूसरा– वैशाख माह में दोनों चतुर्थीओं का पूजन कर, शंख, वस्त्र दक्षिणा देने का विधान है। इस माह में "संकर्षण" गणेश का पूजन होता है।

तीसरा– जेठ माह में "प्रद्युम्न रूपी" गणेश जी का पूजन कर फल, शाक, मूली आदि दान दें।

चौथा– आषाढ़ माघ में "अनिरुद्ध रूपी" गणेश जी का पूजा व्रत करके सन्यासियों को तुम्बी इत्यादि देने का विधान है। शास्त्रों में इस दिन का बहुत महत्व बताया गया है।

पांचवां – सावन मास में स्वर्ण के गणेशजी बनाकर उन पर स्वर्ण की दूर्वा चढ़ाएं इस प्रकार 5 वर्ष तक व्रत पूजन कर अभीष्ट की प्राप्ति हो सकती है ।

छठवाँ – भाद्रपद यानी भादों माह में "सिद्धिविनायक" की पूजा होती है। इस माह में 21 प्रकार के पत्ते जैसे – शमी पत्र, भंगरेया, बिल्वपत्र, दूर्वा, बेल, धतूरा आदि के पत्ते गणेश जी पर चढ़ाए जाते हैं। एक एक पत्ता ॐ गं गणपतये नमः कहकर गणेश जी पर चढ़ाया जाता है। कहते हैं, ऐसा करने से यानी पूजा दान करने से वर्षों तक व्यक्ति को सुखों की प्राप्ति होती है।

सातवां– अश्विन या क्वार मास की चतुर्थी को पुरुष–सूक्त द्वारा अभिषेक करना अति पुण्यदायी माना जाता है।

आठवां– कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को करवा चौथ कहते हैं। यह महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अपने सुहाग की लंबी उम्र की कामना के लिए व्रत है इसमें 10 करवे गजानन को अर्पित करने के बाद महिलाओं में बांट दिए जाते हैं।

इस व्रत को 12 या 16 साल तक करने का विधान है। इस पूजा में चांद को भी अर्ध्य दिया जाता है ।

नौवां – मार्गशीर्ष या अगहन चतुर्थी में किया जाने वाला व्रत अत्यंत कठिन होता है। यह व्रत 4 वर्ष तक किया जाता है। फिर कुछ व्रत पूजन आदि कर इसे बंद कर दिया जाता है। अगहन चतुर्थी महात्म का वर्णन स्कन्द पुराण में है ।

दसवां – माह की चतुर्थी पर विघ्नेश्वर का व्रत पूजन भक्ति करने से और ब्राह्मण को दान दक्षिणा देने से धन का अभाव नहीं होता।

ग्यारहवां– माघ मास में गजमुख गणेश का पूजन कर, तिल लड्डू चढ़ाने का विधान है। इसमें गणेश जी की मूर्तिपूजा विशेष मानी जाती है। गणेशजी को अर्घ्य प्रदान कर तिल के लड्डू या तिल से बनी मिठाइयां चढ़ाना अति शुभ माना जाता है। और अर्घ्य में लाल चंदन, पुष्प, दूर्वा, अक्षत, शमीपत्र, दूध, दही और जल मिलाकर देते हैं। फाल्गुन मास में धुंडीराज गणेश का पूजन किया जाता है ।

बारहवां – फाल्गुन माह में चतुर्थी व्रत कर दान दक्षिणा देने से गणेश जी की दया और करुणा अपने भक्तों पर बनी रहती है ऐसा माना जाता है। और अंत में भक्तों को गणेश जी के दिव्य लोक में स्थान मिलता है। वैसे तो, हर मास की हर पक्ष पखवाड़े की चतुर्थी महत्वपूर्ण है परंतु कुछ चतुर्थी ऐसी हैं जो एक पर्व का रूप ले लेती है। इन चतुर्थी तिथि को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

बहुला चतुर्थी – भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को बहुला चौथ या बहुला गणेश चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है। महिलाएं इस व्रत को संतान की रक्षा के रूप में भी मानती हैं। इस चतुर्थी व्रत में गणेश पूजन तो करते ही हैं ,परंतु गौ पूजन का भी बहुत महत्व मानते हैं। मान्यता है, कि इस व्रत को रखने से संतान के कष्ट अपने आप ही दूर हो जाते हैं ।यह व्रत निसंतान को संतान देता है और संतान को मान-सम्मान संपदा ऐश्वर्य और निरोगी काया देता है। बहुला चतुर्थी के व्रत में माताएं पूरा दिन निराहार रहकर शाम को मिट्टी की गाय और बछड़ा बनाकर उसकी पूजा करती है। भगवान की पूजा कथा करके उन्हें भांति भांति के पकवान बनाकर उनका भोग लगाते हैं। इस प्रसाद को भगवान को भोग लगाने के बाद सब में बैठकर इसे शाम को गाय/बछड़े को खिलाया जाता है। इस दिन श्री गणेश गाय माता और शिव की पूजा करने से सुख समृद्धि का आशीर्वाद मिलता है।

बहुला चतुर्थी व्रत की कथा भी बहुत रोचक है। जब श्री विष्णु जी ने भगवान कृष्ण के रूप में अवतार लिया, तब कई देवी-देवताओं ने भी गोप गोपियों के रूप में अवतार लिया। 'कामधेनु' नाम की गाय के मन में भी कृष्ण भगवान की सेवा करने का विचार आया और अपने अंश से बहुला नाम की गाय बनकर नंद बाबा की गौशाला में आ गई। भगवान कृष्ण का बहुला गाय से बहुत स्नेह था। एक दिन कृष्ण जी ने बहुला की परीक्षा लेनी चाहिए। वह एक सिंह का रूप धर बहुला के सामने आ गए। बहुला सिंह को देख घबरा गई क्योंकि, वह अपने भूखे बछड़े को दूध पिलाने जा रही थी । उसने विनती की कि मैं अपने बछड़े को दूध पिला कर आती हूं तब मुझे आप खा लेना। बहुला के बार-बार आश्वासन देने पर सिंह ने उसे जाने दिया। थोड़ी देर बाद, बहुला अपने बछड़े को दूध पिला कर वापस शेर के पास आ गई । उसकी सत्य निष्ठा देखकर श्री कृष्ण भगवान बहुत खुश हुए और अपने वास्तविक रूप में आकर बहुला से बोले, 'हे बहुला तुम परीक्षा में सफल हुई अब से भाद्रपद चतुर्थी के दिन गौ माता के रूप में तुम्हारी पूजा होगी । तुम्हारी पूजा करने वाले को धन संतान समृद्धि का सुख मिलेगा ।'

भादों की शुक्ल पक्ष चतुर्थी – शिव पार्वती के पुत्र गणेश जी के जन्म कथा वर्णन से पता चलता है। गणेश जी का जन्म ना होकर निर्माण पार्वती जी के शरीर से उतारी गई हल्दी उबटन से हुआ था। स्नान करने जाते समय पार्वती माता उन्हें अपने रक्षक के रूप में बैठाकर स्नान करने चली गई

और भोलेनाथ इस बात से अनभिज्ञ थे। पार्वती मां से मिलने में गणेश जी को अपना विरोधी मानकर उनका सिर काट कर उन्हें अपने रास्ते से हटा दिया। यह जानकर, मां भगवती शिवा क्रुद्ध हो गई और उन्होंने प्रलय करने की ठान ली। देवी देवताओं ने देवर्षि नारद की सलाह पर जगदंबा की स्तुति करके उन्हें शांत किया। शिव जी के निर्देश पर विष्णु जी उत्तर दिशा में सबसे पहले मिले जीव 'हाथी' का सिर काट कर ले आए। महामृत्युंजय रुद्र ने गज के उस मस्तक को बालक के धड़ पर रखकर उसे पुनर्जीवित कर दिया। माता पार्वती ने उत्साह में भरकर उस बालक को गले लगा लिया और देवताओं में अग्रणी होने का आशीर्वाद दिया। ब्रह्मा विष्णु महेश ने उसे सर्वाध्यक्ष घोषित करके अग्र पूज्य होने का वरदान दिया । भगवान शंकर ने कहा कि, हे गिरिजा नंदन, विघ्ननाश करने में तेरा नाम सर्वोपरि होगा। तुम्हारा जन्म चतुर्थी के दिन चंद्रोदय के समय होने के कारण स्थिति में जो तुम्हारा व्रत पूजन करने के पश्चात चंद्रमा को अर्घ देकर पूजन करेगा और ब्राह्मण को मिष्ठान और भोजन कराएगा उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी । जो व्यक्ति भादों मास की चतुर्थी की रात को चंद्रमा देख लेते हैं उन पर दोष या कलंक लग जाता है ऐसा सुना गया है । गणेशोत्सव हिंदुओं का उत्सव है यह कमोबेश संपूर्ण भारत में मनाया जाता है, परंतु महाराष्ट्र में विशेषकर मुंबई और पुणे का गणेश उत्सव प्रसिद्ध है। भादो मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से यह पूजा उत्सव आरंभ होकर 10 दिन बाद अनंत चौदस को समाप्त होता है। जो लोग गणेश प्रतिमा घरों में प्रतिष्ठित करते हैं, वह चौदस को मूर्ति विसर्जन करते हैं। वैसे, मूर्ति विसर्जन डेढ़ दिन 3 दिन 5 दिन 7 दिन पर भी किया जाता है ,और इस प्रकार मूर्ति विदा कर गणेश उत्सव का समापन होता है।

करवा चौथ – यह हिंदुओं का प्रमुख त्यौहार है। यह भारत के पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान का पर्व है। यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। सौभाग्यवती महिलाएं मनाती हैं। यह व्रत सुबह सूर्योदय से पहले करीब 4:00 बजे से शुरू होकर रात में चंद्रमा दर्शन के बाद पूर्ण होता है। ग्रामीण स्त्रियों से लेकर आधुनिक महिलाएं तक यह व्रत बहुत श्रद्धा और उत्साह से करती हैं। पति की दीर्घायु एवं अखंड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचंद्र गणेश की पूजा अर्चना की जाती है। कार्तिक पक्ष की चतुर्थी को करके चतुर्थी व्रत के नाम से भी जानते हैं किसी भी जाति संप्रदाय की महिलाएं इस व्रत को कर सकती हैं।इस दिन भगवान शिव–पार्वती ,स्वामी कार्तिकेय, श्री गणेश एवं चंद्रमा का पूजन किया जाता है। रात में चंद्रोदय के बाद ही यह पूजा होती है प्रत्येक परिवार का अपना विधान है। अपने पारंपरिक रूप से इन सब की पूजा करते हैं इसमें करवा बांटने का बहुत महत्व है। करवों में पूरी लड्डू अनाज भरकर साथ में सुहाग सामग्री और वस्त्र रखकर बांटा जाता है। इस दिन महिलाएं करवा चौथ की कथा पड़ती या सुनती हैं यह व्रत निराहार और निर्जल रहकर करते हैं पूजन के बाद घर के बड़ों का आशीर्वाद लेकर व्रत तोड़ा जाता है।

संकट चतुर्थी या सकट चौथ – यह व्रत हर महीने में पड़ता है लेकिन सबसे प्रमुख माघ मास की चतुर्थी को हम इसे सकट चौथ के रूप में मनाते हैं। इसे हम 'संकष्टी चतुर्थी' के रूप में भी जानते हैं ।इस दिन, माताएं अपने बच्चों की सलामती के लिए दुआ मांगती हैं। सुबह विघ्नहर्ता की पूजा करती हैं और रात में चंद्रमा पूजन के बाद व्रत तोड़ते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस दिन गणेश जी पर आया संकट टल गया था इसलिए इसका नाम सकट चौथ पड़ा। इस व्रत को तिलकुटा चौथ भी कहते हैं। कहीं कहीं यह मां की चतुर्थी के रूप में जानी जाती है ।जो व्यक्ति पूरे वर्ष चतुर्थी व्रत नहीं करते हैं, वह यदि मां की चतुर्थी का व्रत करने तो ऐसी मान्यता है कि उन्हें पूरे वर्ष की चतुर्थीओं का फल मिल जाता है। माघी तिल चतुर्थी के दिन मंदिरों में भीड़ का तांता लगा रहता है। मां की चौथ के अवसर पर महिलाएं दिनभर व्रत पूर्ण कर रात में गणेश पूजन और चंद्रमा पूजन करके तिल लड्डू और तिल की मिठाइयां नैवेद्य में अर्पित करती हैं। इस दिन, पूजा के साथ अथर्व शीर्ष और गणेश जी के बारह नाम जपने का महत्व माना जाता है। चतुर्थी किसी भी मांस या किसी भी पक्ष की हो विघ्नविनाशक एवं चंद्रमा की पूजा विशेष लाभकारी होती है। जो कोई चतुर्थी पूजन करता है, उसकी सब बाधाएं और विपत्तियां हल हो जाती है और चौथ माता एवं सभी देवी देवता अपनी कृपा दृष्टि अपने भक्तजनों पर बनाए रखते हैं। चौथ माता, मां पार्वती का ही एक रूप है । इनका एक मंदिर राजस्थान के सवाई माधोपुर में पहाड़ की चोटी पर स्थित है। यह मंदिर बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध है। करवा चौथ भाद्रपद चतुर्थी आदि में लाखों की संख्या में दर्शनार्थ यहां आते हैं। माता की पूजा कर उन्हें अखंड सौभाग्य,संतानों की सलामती और सुखी पारिवारिक जीवन का आशीर्वाद मिलता है। यहां सैकड़ों साल से एक अखंड ज्योति भी जल रही है। इस प्रकार के कई और चौथ माता मंदिर हमारे देश में है जहां विशेषकर चतुर्थी तिथियों पर लोग अपने श्रद्धा अर्पण करने जाते हैं। यह मंदिर चौथ माता के बरवाड़ा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

होलीपुरा की सिद्ध गुफा

- भरत चतुर्वेदी (अचल), रिषड़ा

ग्राम होलीपुरा स्थित श्री चन्द्रमौलेश्वर गुफा पूज्य स्वामी श्री हरिहरानंद तीर्थ जी की तपस्थली आज ग्रामवासियों की अगाध आस्था का केन्द्र है। अतः गुफा का ऐतिहासिक एवं भौगोलिक वर्णन करने से पूर्व पूज्य स्वामी जी के बारे में जानना आवश्यक है। श्री श्री स्वामी हरिहरानंद जी तीर्थ का जन्म नेपाल के राजपुरोहित परिवार में हुआ था, लेकिन कुमार सिध्दार्थ की भांति आप स्त्री, पुत्र, धन, धान्य का मोह त्यागकर हिमालय की घाटियाँ पार कर ऋषिकेश पहुंच गये। जहां आपने श्री स्वामी अनन्तानन्दजी से दीक्षा लेकर बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य के साथ संन्यास धर्म का विधिवत पालन किया। साधना पूर्ण कर आप बनारस, प्रयागराज, अयोध्या, बाराबंकी, लखनऊ, औरैया एवं प्रतापगढ़ होते हुए बटेश्वर पहुंच गये। आपके होलीपुरा आगमन के बारे में श्री भरत चन्द्र जी इन्दौर की पुस्तक स्वामीजी कथामृत के अनुसार स्व. द्वारिकानाथ जी ने बताया हैं कि संयोग से बटेश्वर के घाट पर होलीपुरा के श्री कुन्दनलाल जी के पिताजी स्व. परशुरामजी, स्व राजाराम मिश्र जी,स्व. विश्वेश्वर दयाल जी एवं अन्य लोगों ने दर्शनोपरांत होलीपुरा चलने का जब आपसे आग्रह किया। जिसे आपने स्वीकार कर लिया। इस सम्बन्ध में जिज्ञासावश जब गाँव के वयोवृध्द कक्का श्री कुन्दन लाल जी से जब पूछा तो वे बताते हैं कि कलकत्ता से बारह सदस्यीय दल जिसमें स्व. परशुरामजी, स्व. रामेश्वर जी, स्व. शंकर जी, रामानन्द जी के पिताजी, लऊ दद्दा, स्व. गनपत राय जी एवं अन्य जन के साथ होलीपुरा गये थे, जबकि भाई साहब चन्द्रकान्त जी के अनुसार होलीपुरा उन्हें स्व. सुरेन बाबू कलकत्ता लाये थे। यहाँ जब उनका मन नहीं लगा तो उन्हें होलीपुरा पहुँचाया गया। अतः पूज्य स्वामी जी होलीपुरा कैसे पहुँचे यह अनुसंधान का विषय अवश्य है। यह बात सम्भवतः सन 1902 की है। जब पूज्य स्वामी जी का होलीपुरा जनकल्यार्थ आगमन हुआ था। आनन फानन में आपके निवास हेतु बड़े घर के स्व. राय साहब के निर्देश पर बाबा झाऊलाल जी के बाग में एक कुटिया का निर्माण कराया गया। जहाँ आरम्भ हो गई नित्य सत्संग की ज्ञान गंगा। कालान्तर में ग्राम से यमुना मार्ग पर लगभग दो ढाई सौ मीटर दूर घने बीहड़ के मध्य एक ऊंचे टीले पर लालहंस एवं रामदीन काछी ने खिलौने के समान मनमोहक गुफा का निर्माण किया, जिसके चारों ओर करील, बबूल, रेवजा का बीहड़ आज भी अपूर्व छटा बिखेरता है। कक्का श्री कुन्दनलाल जी बताते हैं कि बीहड़ की भूमि समतल करने हेतु मण्डी के स्व. परशुरामजी, हलधर हवेली के स्व. रामनारायण जी एवं मिश्र परिवार के स्व. राजारामजी ने श्रमदान कर गुफा निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। बाद में पूज्य स्वामीजी के निर्देशानुसार माँ अन्नपूर्णा, श्री आत्मेश्वर, काशी विश्वेश्वर एवं आनन्देश्वर महादेव के कतारबध्द मन्दिरों की स्थापना कराई।

बाद में गुफा के ऊपर स्वामी जी के लिए पक्का कमरा, सत्संग भवन, मुख्य द्वार एवं नई गुफा व कुँआ बना। गांव से गुफा मार्ग का निर्माण स्व. जयसीराम जी के आह्वाहन पर ग्रामवासियों द्वारा श्रमदान कर किया गया। जिससे मार्ग का नाम दादा जयसीराम मार्ग पड़ा। सन 1984 में स्व. डालचन्द्रजी एवं स्व. हुकुमचन्द्र जी के अथक प्रयास से स्वामीजी की मूर्ति एक भव्य एवं विशाल भण्डारे के साथ स्थापित की गई। गुफा की नियमित सेवा में ग्राम वासियों के साथ पाण्डे परिवार की भूमिका सदा उल्लेखनीय रही है। वर्तमान में भाई साहब श्री नवीन चन्द्र जी की समर्पित भाव से सेवा अनुकरणीय है। यह जानकर आश्चर्य होगा कि पूज्य स्वामी जी की असीम कृपा से आज भी नित्य पूरे गुफा प्रांगण में स्वामी जी, आनन्देश्वर, आत्मेश्वर, चन्द्रमौलेश्वर, अन्नपूर्णा, किसान बाबा, तुलसी जी एवं गुफा में पूज्य स्वामी जी, दुर्गा जी व हनुमानजी के मन्दिरों में कुल दस स्थानों धूप एवं आरती के दिये अनवरत रूप से आज भी प्रज्वलित किए जाते हैं। गुरू पूर्णिमा पर्व आज भी गुफा पर बड़े धूमधाम से आयोजित होता है। जिसमें अखण्ड रामायण, हवन, पंचामृत एवं प्रसाद वितरण के साथ भण्डारा उल्लेखनीय है।

पूज्य स्वामी जी सन 1950 में प्रतापगढ़ के रानीगंज में ब्रह्मलीन हो गये एवं काशी के मणिकर्णिका घाट पर उन्हें जलसमाधि दी गई। स्वामीजी के सानिध्य में गुफा पर जन्माष्टमी, शिवरात्रि एवं गुरु पूर्णिमा पर्व विशेष उत्सव रुप में आयोजित होते थे। सायं चार बजे से नित्य स्वाध्याय आपकी दैनिक चर्या थी। स्वामीजी महाराज का मन दयालु था। वे किसी को पीड़ति नहीं देख सकते थे। किसी को विपत्ति में देख साधना के तेज से उसकी सहायता करते। लोग इसे सिध्दि या चमत्कार की संज्ञा दे देते। इसके असंख्य उदाहरण पढ़ने व बुजुर्गों से सुनने को मिल जाते हैं। आपके सानिध्य में होलीपुरा गांव की समृध्दि चरमोत्कर्ष पर थी। तभी तो हर होलीपुरा वासी के लिए स्वामी जी आज भी आदि गुरू के रूप में पूज्य हैं।

सामाजिक चेतना

- भरत चंद चतुर्वेदी, पुरा/भोपाल

कोई भी समाज जन बल तथा धनबल से ही अपनी भूमिका का निर्वाहन करता है। वर्तमान समय तो अर्थ युग है। समाज व परिवार में रिश्ते भी संपन्नता के साथ निर्वाहन हो रहे हैं। समाजिक कार्यों में समाज के परिवारजनों के अधिकाधिक उपस्थिति से ही कार्यक्रमों की सफलता का मूल्यांकन होता है। ठीक इसी प्रकार कार्यक्रम की व्यवस्था हेतु धन की भी आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में समाज के संपन्न व्यक्तियों को भी अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करना चाहिए। समाज में कुछ लोग तन व समय देकर तथा कुछ लोग धन देकर कार्यक्रमों को सफल बनाते हैं। तन मन धन देने वालों के समन्वय से ही समाज उन्नति के शिखर पर पहुंचता है। हमारे परिवार के जिन पूर्वजों ने अपनी संपन्नता से समाज को सिंचित किया था। उन सब का नाम आज भी महासभा के इतिहास में व संपूर्ण समाज में अमरत्व को प्राप्त किए हुए हैं।

उनका नाम आज भी समाज में गाँव में तथा कुटुंब में श्रद्धा से लिया जाता है पूर्व में भी कई संपन्न व्यक्ति थे और आज भी हैं, जिनके विचारों के अनुसार समाज व कुटुंब जनों पर व्यय करना निरर्थक है। भदावर क्षेत्र के गांव में कुछ परिवारों का वैभव मैंने अपने बचपन में देखा है तथा कुछ के बारे में मैंने अपने पूर्वजों से परिवारों की संपन्नता व उनके वैभव के बारे में सुना है। इन परिवारों ने जब तक समाज हित धन वर्षा की जाती रही तब तक वे परिवार गांव में फले फूले और जैसे ही उन्होंने लक्ष्मी की कृपा को सहेजना प्रारंभ किया। लक्ष्मी की कृपा उन परिवारों पर कम हो गई तथा वे परिवार कालांतर में गाँव छोड़कर अन्यत्र रहने लगे। इसलिए उन बंधुओं से मेरा आग्रह है कि जिन पर लक्ष्मी की असीम कृपा है अपनी आय का एक निश्चित अंश समाज के कार्य कार्यक्रमों तथा धर्मार्थ कार्य में संकल्प के साथ योगदान करते रहेंगे। तो लक्ष्मी की और कृपा उन पर बनी रहेगी। कुछ लोगों व परिवारों के लिए यह कार्य मुश्किल नहीं है। बरसों पूर्व हमारे समाज के विवाह के समय जब बारात खाने आती थी। तब महिलाएं यह विनती गाती थी,

जाति हित कारण सों विनती हमारी यही,
हर शुभ अवसर पर दान कुछ कीजिए।।
महिला सहायता और छात्रवृत्ति दीजिए,
सेवक है जाति की सदैव चतुर्वेदी चंद्रिका
बाके सहायतार्थ दान कछु कीजिए।।
जाति को सुधार और शिक्षा को प्रचार कीजिए,
घर परिवार के बालक बालिकाओं को संस्कार दीजिए।।

हमारा संपूर्ण समाज सप्त ऋषियों की संताने हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने हमें सदैव तन, मन, धन से समाज सेवा करने की शिक्षा दी थी। यही नहीं हम अपने देश के इतिहास को पड़े तो हमारे देश के कई महापुरुषों ने देश पर, समाज पर आए संकट के समय अपना शरीर तक दान कर दिया था। इसी श्रंखला में दधिच, कर्ण व भामाशाह का नाम आज भी हम श्रद्धा से लेते हैं। देश व समाज की सेवा में अपने जीवन की संपूर्ण कमाई से एकत्र धनराशि महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी। हमारा समाज भी इन्हीं सबसे प्रेरणा लेकर संपूर्ण भारत वर्ष में अपना स्थान बनाए हुए हैं। हमारे समाज में जाति, धर्म की खातिर आतताइयों से कई बार मुकाबला किया है। आज फिर देश कोरोना नामक भयंकर महामारी से जूझ रहा है। हमारे समाज में स्थानीय स्तर पर इस माहमारी में अपना सकारात्मक योगदान किया है। सामूहिक रूप से भोपाल,लखनऊ व कलकत्ता सभा ने यथासंभव धन प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री कोष में राशि देकर सहयोग प्रदान किया है। इसी कड़ी में प्रदेश के शासकीय सेवाओं ने अपने अपने ऑफिस में 1 दिन का वेतन दिया है। महासभा के संयुक्त सचिव भाई शशांक ने कई दिनों तक 100 मजदूरों को नित्य भोजन के पैकेट बांटे हैं। श्री अनमोल ने 1000 रुपये प्रधानमंत्री कोष में दिए हैं। श्रीमती उषा चतुर्वेदी ने 1000 लेखिका संघ के माध्यम से दिए हैं। कु. शिविका, मा. शिवांक, समर्थ जी, शारदा जी, शिवांगी जी ने अपना सहयोग स्थानीय स्तर पर किया व प्रधानमंत्री सहायता कोष में भी सहायता दी। योग केंद्र के अंतर्गत

पूरी के 500 पैकेट स्टेशन, अस्पतालों में वितरित किए हैं। कानपुर शाखा सभा ने कई दिन जरूरतमंदो को भोजन कराया। इसी क्रम में विपिन जी व पंकज जी (लखनऊ) ने भी भोजन वितरित किया व आवश्यकता अनुसार सहयोग किया। अन्य स्थानों पर भी अपना योगदान दिया है यह सब कार्य करने की प्रेरणा हमें अपने पिता तुल्य पूर्वजों से पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त हुई है। हमारे समाज में सदैव दान परिवार के मंगल कार्य करने के शुभ अवसर पर देने की रही है, परंतु वर्तमान में हमारे कई परिवार इन अवसरों पर महासभा व पत्रिका को सहायता देने में कंजूसी करते हैं। अपने परिवार में विवाह बड़े ठाट बाट से करते हैं। इस अवसर पर महासभा, पत्रिका और महाविद्या देवी को 101/– या 201/– दान देते हैं। जिनमें दोनों पक्षों की तीन तीन पीढ़ी के नाम साथ में होते है। इसी प्रकार लाखों रुपये खर्च कर निर्मित भवन का उद्घाटन जोरदारी से करते हैं। इस अवसर पर भी पूर्व अनुसार धनराशि महासभा, पत्रिका को देते हैं।

इतना ही नहीं महासभा के आजीवन सदस्य बने 25,30 वर्ष या इससे भी अधिक का समय हो गया और उसी पूर्व जमा धनराशि पत्रिका प्राप्त कर रहे हैं। एक अंक प्राप्त न होने पर आसमान सिर पर उठा लेते हैं। परंतु यह नहीं सोचते कि इतनी कम राशि में पत्रिका कैसे छपती होगी व कैसे डाक व्यय होता होगा। महासभा ने कई बार समाज के समक्ष रखा है जो समाज के सदस्यों ने इस संदर्भ में पत्रिका की सहायता करने का विचार नहीं किया है। पत्रिका की छपाई की कीमत बढ़ी है। डाक से भेजे जाने का खर्च बड़ा है। फिर भी महासभा पत्रिका निकालकर प्रत्येक माह हमें पत्रिका भेज रही है। इसलिए महासभा में कार्यरत सभी लोगों की प्रशंसा करता हूँ। महासभा से हमारे समाज का आम नागरिक बड़ी आशाएं लगाता है। कई लोग जो कार्यकारिणी में स्थान नहीं प्राप्त कर पाए। चाहे जब महासभा की आलोचना कर पूछते हैं कि महासभा ने क्या किया। मेरे मत में महासभा की गतिविधियों का उन्हें ज्ञान नहीं है। और यदि है तो यह उनकी कुंठा का ही प्रतीत है। मेरा ऐसे सब बंधुओं से आग्रह है कि वह महासभा से पूछने की बजाए, स्वयं का समाज में क्या योगदान है, वह बताएं। जिससे भविष्य में उनके नाम पर महासभा में विचार हो सके। इन सब बातों का मेरे कहने का तात्पर्य है कि हम समाज में निश्चल, निस्वार्थ रूप से कार्य करें तथा कार्य का मूल्यांकन समाज अवश्य करता है। मेरा फिर आप सभी समाज जनों से आग्रह है कि जो भी हम सहायता समाज को कर सकते है। वर्ष में एक बार अवश्य प्रदान करें। फिर वह शिक्षा के लिए हो। पत्रिका में विज्ञापन देकर, विधवा सहायता हेतु या अन्यथा जो उन्हें उचित लगे उस हेतु प्रदान कर महासभा सक्षम बनाए। महासभा सक्षम होगी तो समाज उन्नति करेगा। समाज प्रेमियों मेरे सामाजिक लेख का सर्वाधिक सुखद पहलू हमारी चतुर्वेदी चंद्रिका पत्रिका है। पत्रिका समाज का दर्पण होती है। उसमें जो विचार छपते हैं। वह समाज के स्वभाव को परिलक्षित करते हैं। जैसा समाज का स्वभाव होगा पत्रिका का स्वरूप उसी के अनुसार होगा। भोपाल से प्रकाशित होने के पश्चात इस पत्रिका ने लेखों और सामाजिक समाचार प्रकाशित कर समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। इस सत्र में पत्रिका के प्रकाशन तथा भोपाल में सेवारत रहते हुए हमारे अभिन्न साथी भाई मुनींद्र जी के

यही हमारी प्राचीन परंपरा रही है। हम जब तक ग्राम में रहे। हमारी संस्कृति व तहजीब आचार विचार खानपान सब ठीक रहे। हमारे गाँव की पक्की हवेलियां आज भी चतुर्वेदियों के वैभव की साक्षी हैं। जो आज भी विराजमान हैं या उनमें एक कोई परिवार रह रहा है। गाँव उजड़ गए। हमारे सभी ग्रामों में उच्च स्वर में बोलने में, बातचीत करने से आकाश गूँजता था। वहां अब खामोशी छाई रहती है। उस समय सगाई समस्या नहीं थी। नाई सगाई करवा देता था। सब मान लेते थे। उस समय हमारे पूर्वज साक्षर थे अब हम डिग्री होल्डर अर्थात उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। सगाई होना जटिल कार्य हो गया है। और यदि सगाई के पश्चात विवाह हो जावे तो लगभग 25-30 प्रतिशत रिश्ते टूट जाते हैं। हम सबको इसका समाधान खोजना होगा। विशेषकर हमारी नारी शक्ति को। यदि हम गांव को बचाए रखते तो यह समस्या इतना विकराल रूप धारण नहीं करती।

मार्गदर्शन में तथा साहित्य व सामाजिक गतिविधियों से जुड़े परिवार के सदस्य तथा पत्रिका के संपादक भाई कुश जी के संपादन तथा हमारे अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में हमें सामाजिक बोध बता कर एवं व्यवस्थापक भाई शशांक ने समाज के परिवारजनों से संपर्क कर हमारी संस्कृति व तीज त्योहारों के संबंध में सर्वश्री भरत चतुर्वेदी (रिसड़ा), दिलीप सिकंदरपुरिया (लखनऊ) मेरे सह सचिव रहे वरिष्ठ समाजसेवी भाई कैलाश जी (कासगंज) तथा भोपाल की श्रीमती उषा चतुर्वेदी व श्रीमती चित्रा जी के सारगर्भित लेखों ने समाज में उत्साह पैदा किया। जिससे समाज के अधिकतर बाँधवों को सटीक संदेश देकर समाज को एक सूत्र में बांधने का ही परिणाम है कि बरसों बाद समाज में महासभा का सभापति निर्विरोध निर्वाचित हुआ। सब के अंत में मैं पत्रिका के व्यवस्थापक के संपूर्ण परिवार का आभार व्यक्त करता हूं कि सब मिलकर पत्रिका के वितरण में सहयोग कर महासभा के खर्च में बचत करते हैं। संपूर्ण समाज की ओर से मैं नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत करता हूँ तथा पूर्व कार्यकारिणी का अच्छा कार्य करने हेतु आभार व्यक्त करता हूँ। यही हमारी प्राचीन परंपरा रही है। हम जब तक ग्राम में रहे। हमारी संस्कृति व

तहजीब आचार विचार खानपान सब ठीक रहे। हमारे गाँव की पक्की हवेलियां आज भी चतुर्वेदियों के वैभव की साक्षी हैं। जो आज भी विराजमान हैं या उनमें एक कोई परिवार रह रहा है। गाँव उजड़ गए। हमारे सभी ग्रामों में उच्च स्वर में बोलने में, बातचीत करने से आकाश गूँजता था। वहां अब खामोशी छाई रहती है। उस समय सगाई समस्या नहीं थी। नाई सगाई करवा देता था। सब मान लेते थे। उस समय हमारे पूर्वज साक्षर थे अब हम डिग्री होल्डर अर्थात उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। सगाई होना जटिल कार्य हो गया है। और यदि सगाई के पश्चात विवाह हो जावे तो लगभग 25-30 प्रतिशत रिश्ते टूट जाते हैं। हम सबको इसका समाधान खोजना होगा। विशेषकर हमारी नारी शक्ति को। यदि हम गांव को बचाए रखते तो यह समस्या इतना विकराल रूप धारण नहीं करती। मेरे द्वारा आज से 35 वर्ष पूर्व चलो गांव की ओर का नारा दिया गया था। और मैंने होली का कार्यक्रम अपने गांव में प्रारंभ किया था। बाद में हमारे देश की सरकारों ने भी गाँव को बचाने हेतु अभियान चलाना प्रारंभ किया।जब से समाज का सभापति बना तो मैंने अपने सभी गाँव का भ्रमण किया तथा नगरों में घूमकर सभी को अपने गांव में वर्ष में एक बार एकत्र होकर कोई कार्यक्रम करना चाहिए। मुझे यह लिखने में प्रसन्नता हो रही है कि हमारे भदावर में पूनम को पुरा, दोज को होलीपुरा, तीज को तालगाँव में होली के अवसर पर सामाजिक आयोजन में हमारे समाज की वैभवशाली होली गायन की परंपरा चल रही है। इसी प्रकार फरौली, जहाँगीरपुर तथा तरसोखर में भी वर्ष में एक बार ग्राम वासियों का स्नेह सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। मेरे प्रयास का यह शुभ संकेत है। इस बार चंद्रपुर ग्राम में चैती आठे के कार्यक्रम में गाँव के बाँधव उपस्थित हुए थे। भविष्य में कछपुरा, पिनाहट, कमतरी, बटेश्वर के बंधु एकत्र होकर कार्यक्रम आयोजन करने पर आपस में विचार कर रहे हैं। कमतरी व कछपुरा वालों को मेरी सलाह है कि वे भी चंद्रपुर के चैती आठों के कार्यक्रम के अवसर पर आने से कार्यक्रम और ब्रह्द रूप में होने लगेगा। यमुना नदी पर नया पुल बन जाने से चंद्रपुर, कछपुरा तथा कमतरी के विकास की संभावना बढ़ गई है। कमतरी में तो कुछ परिवार अपनी हवेलियों को ठीक करा रहे हैं। संभवत वहां तहसील कार्यालय बन रहा है। होलीपुरा व बटेश्वर हेरिटेज ग्राम में शामिल होने से इन गांवों के विकास की संभावना बढ़ी है। पुरा तालगाँव तो बसे हुए हैं। पिनाहट में बाँधव अपनी हवेली का रखरखाव किए हुए हैं। वह वर्ष में एक दो बार जाते भी हैं। चंद्रपुर में कई परिवारों ने बगीचे लगाना प्रारंभ कर दिए हैं। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है हमारे पूर्वज उस युग के प्रसिद्ध नगर मथुरा से कई कारणों से भदावर व राजस्थान के लिए प्रवासित हुए थे। कई पीढ़ियों तक हम सब वैभव के साथ वहां रहे तथा विगत 70 वर्षों से पुनः हम अपने ग्रामों को छोड़कर नगरों में जाकर बस गए हैं। नगरों की बढ़ती आबादी तथा व्याप्त समस्याओं पर आने वाले समय में नारकीय जीवन से उबकर हमारी संतानें गांव की ओर रुख करेंगी। इसलिए मेरी संपूर्ण समाज वालों से आग्रह है कि हम सब अपने घरों को दुरुस्त करा लें, ताकि संकट के समय हमारे परिवार को गांव में रहने का स्थान सुरक्षित रहे। मेरा आप सभी से निवेदन है कि अपने पूर्वजों के वैभवशाली अतीत जिसको बता कर हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। उन बुजुर्गों की याद उनकी देहरी और उनकी यादों को संजोने का प्रयास करें। अपनी देहरिओं व घरों को ठीक व दुरुस्त करा लें।

सुगम जीवन के उपाय

- शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फीरोजाबाद

कोरोना संक्रमरण वायरल जैसे विपत्ति काल में हमें धैर्य रखकर विपदा से बचने और जीवन को सुगम बनाने के उपायों पर विचार करना चाहिए। यही भाव हमें विपदा से निपटने की भरपूर उर्जा देगा। ऐसे संदेश हमारे वेदों और पुराणों में भरे पड़े है। हमारे महापुरूषों ने भी उन्हें लिपिबद्व किए है। हम महापुरूषों की रचनाओं का अध्ययन कर अपनी बैचेनी को कम कर सकते है। उनकी रचनाओं से हमें जीवन को सुगम बनाने की तमाम अहम सूत्र मिल सकते है। हमें अपने देश को मौजूदा संकट से उबारने के लिए सतर्क और जागरूक नागरिक जैसा व्यवहार करना है जो समय की मांग है। आप कितने ही अनुभवी और बुद्विमान क्यों न हों, इस तथ्य को दिल और दिमाग में अच्छी तरह से बैठा लीजिए कि वर्तमान दशा में लॉकडाउन के अलावा और कोई अहम विकल्प देश के समक्ष नहीं है। प्रधानमंत्री का लॉकडाउन का फैसला कितना जरूरी था, यह सहजता से समझा जा सकता है। कविवर रहीम ने भी लिखा है

रहिमन विपदा है भली जो थोड़े दिन होय,
हित अनहित या जगत में जानि परै सबकोय।

उनकी एक अन्य रचना है।

रहिमन चुप हो बैठिये देख दिनन को फेर,
नीके दिन जब आएंगे बनत न लगिहैं देर।

कहने का आशय यही कि पूरे मनोयोग से आपदा काल में देश के प्रति अपनी भूमिकाओं का निर्वहन कीजिए। आत्म संयम और सोशल डिस्टेंसिंग से कोरोना को मात देने में सहयोग दीजिए।

कचौरी

संकलन - मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, नोयडा

क्यूँ हलचल हुई ना मन में और हो भी क्यों नहीं नाम ही ऐसा है ! ना जाने किसने बनाया होगा इसको सबसे पहले, पर जिसने भी बनाया होगा, वो पक्का खाऊ रहा होगा ।

क्या बच्चे क्या बूढ़े और जवान, जो देखो इसके स्वाद क़ा दीवाना है । चाहे कड़कड़ाती सर्दी हो या भीगता हुआ मौसम या दहकते अंगारों समान गर्मी, आपको हर दुकान पर हर ठेले पर इसके चाहने वालों की भीड़ अवश्य दिखाई देगी।

कचौरी के पाये को निकलने में करीब आधा घंटा लगता है। पर तब भी व्यक्ति तनिक भी निराश नहीं होता। एकटक कड़ाही के दृश्य को देखता रहता है। गरम खौलते तेल में मैदे की वो चपटी गोलियां आहिस्ता से उतारी जाती है और वो उस गरम तेल में अपनी हमउम्र सहेलियों के साथ अठखेलियाँ करती हुई अपने यौवन को प्राप्त करती है। ज्यों ज्यों वो सिकते हुए अपने पूर्ण आकार में आती है। कड़ाही के इर्द गिर्द भीड़ क़ा आकार भी बढ़ता जाता है। ज्यों ही उन्हीं कड़ाही से परात में उड़ेला जाता है त्यों ही चुपचाप खड़ी मानव जाति में उन्हे पाने के लिए मन में हलचल और तड़पड़ाहट सी मच जाती है। मन में भय रहता है कहीं वो कचौरी से वंचित ना रह जाएं। प्रायः कचौरी दो के जोड़े में ही खायी जाती है। अगर कोई व्यक्ति एक ही कचौरी लेकर होशियारी भी करता है तो भी उसके खत्म होते होते वो अपने मन की कशमकश में दूसरी कचौरी के लिए भी अपना दोना आगे बढ़ा ही देता है। इसका स्वाद बताने से नहीं बल्कि खाने से ही बताया जा सकता है। विभिन्न प्रकार की चटनियाँ इसके स्वाद को कई गुणा बढ़ाकर मानव की जीभ को और उत्तेजित कर देती है। क्या अमीर और क्या गरीब सब ही दुबारा चटनी लेने के लिए लालायित रहते है

दो कचौरी खाने के बाद भी जब व्यक्ति का मन नहीं भरता है तो वो थैली में घऱ के लिए भी 10-15 कचौरिया पैक करवा लेता है, ताकि घऱ जाकर परिवार वालों के साथ फिर से कचौरी का लुत्फ उठा सके।

यहाँ पर एक दृश्य और उत्पन्न होता है। जब दुकानदार गिनती करते हुए अपने हाथों से गर्मागर्म कचौरी थैली में डालता है तो उसकी अंगुलियों की फुर्ती देखने लायक होती है। उधर ग्राहक भी मन ही मन में गिनती करता रहता है कहीं एक दो कचौरी कम नहीं डाल देवें। मेहमान नवाजी के लिए बाजार से कचौरिया ले जाना भी परंपरा बन चुकी है। मेहमान को भी सुबह सुबह मेजबान से यही आशा रहती है कि उसे नाश्ते में कचौरी ही परोसी जाएं। कचौरी को देखते ही वो शर्मीला मेहमान भी शम्मी कपूर की तरह जंगली बन जाता है, क्योंकि उसे पता है शर्म करी तो मेजबान उसके हिस्से की कचौरी भी साफ कर सकता है।

कचौरी के कई फायदे है ! कब्जी की तो ये रामबाण औषधि है। इसमें डाले गए छप्पन प्रकार के मसाले व्यक्ति को अनंत ऊर्जा प्रदान करतें है। कचौरी की दुकान पर सामाजिक समरसता क़ा भाव देखते ही बनता है। कोई परिचित मिल जाए तो एक बार ऊपर के मन से ही सही पर कचौरी खाने क़ा निवेदन भी करना पड़ता है या फिर उसके द्वारा खायी गयी कचौरियों क़ा भुगतान करने की भी जद्दोजहद करी जाती है। ऐसा दृश्य आपको सोने चांदी की दुकानो पर भी देखने को नहीं मिलेगा।

जब कोई एक दोस्त सब दोस्तों को अपनी ओर से सबको कचौरी खिलाता है तो उसके चेहरे पर गर्व , संतुष्टि और सरलता के भाव देखते ही बनते है।

आजकल स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोग समाज में कचौरी के बारे में गलत अफवाह फैलाते है। पर मजे की बात तो ये है कि ये बुराई करने वाले लोग भी चुपके चुपके कचौरी खाते हुए कई बार पकड़े जाते है। पूछने पर बड़े प्यार से बोलते है, अरे ! आज ही खा रहा हूँ भाई ....

अभी लॉकडाउन में हम सब कचौरी के लिए तरस रहे है। कई घरों पर महिलाए बना भी रही है। पर सच कहूँ तो जो माहौल ठेले और दुकान पर मिलता है, वो घऱ पर कभी नहीं मिलता। हालांकि घरवाली की बढ़ाई तो करनी ही पड़ती है।

आप अभी घऱ पर रहकर इंतजार करें। आशा है जल्द ही कचौरी के ठेले और दुकानें खुलेगी और हम अपनी उंगलियां चाटते नजर आएंगे।

नवरात्रि और नवार्ण मंत्र

- श्रीमति शिवांगी चतुर्वेदी, भोपाल

'' ऐं ही क्लीं चामुण्डाये विच्चे''

नव का अर्थ नौ तथा अर्ण का अर्थ अक्षर होता है। अतः दुर्गा जी का यह नवार्ण मंत्र ''ऐं ही क्लीं चामुण्डाये विच्चे'' नौ अक्षरों वाला मंत्र है। इस नवार्ण मंत्र के एक-एक अक्षर का संबंध दुर्गा की एक-एक शक्ति से है और उस एक-एक शक्ति का संबंध एक-एक ग्रह से है। ब्रह्मांड के सारे ग्रह एकत्रित होकर जब सक्रिय हो जाते है तब उसका दुष्प्रभाव प्राणियों पर पड़ता है।। ग्रहों के इसी दुष्प्रभाव से बचने के लिए नवरात्री में मॉ दुर्गा की पूजा की जाती है। '' नवांनां रात्रिणा समाहार नवरात्रम। निर्गुण, सगुणरूपा चिन्मयी पराशक्ति की उपासना का पर्व है नवरात्री। यह पर्व ग्रहों के दुष्प्रभाव को दूर करनें के साथ समृद्वि, आत्मोद्वार के संबर्धन और अनीत, असत्य का विरोध करने की दृष्टि ही नही देता वरन नवशक्ति को जाग्रत करने वाला महाजागरण भी है। मॉ दुर्गा की नवधा शक्ति जिस समय एक महाशक्ति का रूप धारण कर ती है तब जीवन के सभी मूल्य देवीपूजा के माध्यम से नवीन हो जाते है। वासंतिक एवं शारदीय दोनों नवरात्रों में मर्यादा पुरूषोतम श्री राम का सानिध्य है। इस नवरात्री में भगवान राम का प्राकट्य हुआ। तुलसीदास जी ने बहुत सुदंर वर्णन किया है- '' भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी, हरशित महतारी मुनि मन हारी अदभुत रूप विचारी।। ''

'' ऊँ हीं दुं दुर्गायै नमः।'' माँ दुर्गा के नवार्ण मंत्र के नौ अक्षरों ऐं, हीं, क्लीं, चा, मुं,डा, ये, वि, चै की शक्तियां क्रमशः शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, कालरात्री, महागौरी तथा सिद्विदात्री है। नवार्ण मंत्र के नौ अक्षरों से संचालित ग्रह क्रमानुसार सूर्य, चंद्रमा, मंगल,बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू तथा केतु हैं। इस नवार्ण मंत्र के तीन देवता ब्रह्मा, विष्णु और महेश है तथा तीन देवियां महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती है। दुर्गा की यह नवो शक्तियां धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरशार्थो की प्राप्ति में भी सहायक होती है। हर एक देवी का प्रथक बीज मंत्र-

शैलपुत्री- हीं शिवायै नमः,
ब्रह्मचारिणी- हीं श्री अम्बिकायै नमः,
चन्द्रघंटा- ऐं श्रीं शक्तयै नमः,
कुष्मांडां- ऐंह्रीं देव्यै नमः,
स्कंदमाता- हीं क्लीं स्वमिन्यै नमः,
कात्यायनी- क्लीं श्री त्रिनेत्राय नमः,
कालरात्री- क्लीं ऐं श्री कालिकायै नमः,
महागौरी- श्री क्लीं हीं वरदायै नमः,
सिद्विदात्री- हीं क्लीं ऐं सिद्वयें नमः।

'' नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुःख हरनी। निराकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूं लोक फैली उजियारी। शशि ललाट मुख महाविशाला, नेत्र लाल भृकुटी विकराला।। रूप मातु को अधिक सुहावे, दरश करत जन अति सुख पावे। जगज्जननी भगवती मां दुर्गा को कोटि कोटि नमन-

'' सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवी दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।''
।। जय माता दी।।

कुलदेवी
महाविद्या शक्तिपीठ, मथुरा

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

'' काष्यादिपुर्यो यदि सन्त लोकेतासां तु मध्ये मधुरैव धन्या।

या जन्म मौञ्जीदूत मुक्ति दानै नृणां चतुर्धा विदधाति मुक्तिम।।''

स्कन्दपुराण में लिखा है कि काशी आदि सप्त पुरी जो मोक्ष दान के लिये प्रसिद्व है उनमें मथुरा विशेष रूप से धन्य है। काशी में केवल मृत्यु से ही मुक्ति मिलती है जबकि मथुरा में जन्म, यज्ञोपवीत, दान तथा मृत्यु इन चारों प्रकारों से मुक्ति मिलती है। अवतार एवं लीला भूमि होनें के फलस्वरूप मथुरा मोक्षदायिका तीर्थ है-'' अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरीद्वारावती, श्चैत ससैते मोक्षदायिका।'' पृथ्वी,पाताल, अन्तरिक्ष तथा भूलोक में भगवान श्री कृष्ण को मथुरा के समान कोई प्रिय नहीं-

न विद्यते च पाताले नान्तरिक्षे न मानुषे।
समानं मथुराया हि प्रियं मम वसुन्धरे।।
सा रम्या च सुषस्ता च जन्मभूमिस्तथा मम।

पुराणों में मथुरा के चार नाम आते हैं- मधुपन्द्य, मधुपुरी, मधुरा तथा मथुरा। सबका सम्बन्ध मधुदैत्य से है जिसे मारकर शत्रुघ्न जी ने ऋषियों का क्लेश दूर किया था।

मथुरा के पश्चिम में टीले पर चतुर्वेदी समाज की कुलदेवी श्री महाविद्या देवी का ऐतिहासिक एवं पौराणिक मंदिर है-

देवी कदम्ववनगा मरूणत्रिकोण, संस्था सितांसिततराम्बुज कर्णिकास्थम।

सत्युस्त काक्षवलयाड़क्तिपाणि पद्यां, बागीश्रवरीं कुल गुरं प्रणमास्मि भक्तया।।

श्री महाविद्या का मंदिर अति प्राचीन शक्तिपीठ है, शक्ति की उपासना आज की उपासना नहीं है बल्कि अत्यन्त प्राचीन और अनादि है। शक्ति और उर्जा हमारे जीवन का आवश्यक तत्व है जिससे हम सब अनुप्राणित है। सम्पूर्ण ब्रहमांड का सृजन एवं पालन का जो अनवरत क्रम चलता रहता है वह देवी शक्ति द्वारा ही निर्दिष्ट है। हम लोगों के यहॉ विवाह में शाखोच्चार में कहा जाता है-

'' श्री कुलदेवी महाविद्ये वरदे त्वत्प्रसादात।''

वेदमंत्रो के उच्चारण, अग्नि के सात फेरो एवं कुलदेवी के आशीर्वाद से संस्कारो व जीवन मूल्यों को नवशक्ति, विष्वास तथा नवीनता मिलती है।

।। चतुर्भजा महादेवी नामज्ञोपवीतिनीम'' श्रीमदभागवत के दशम स्कन्ध में लिखा है कि यहॉ अम्बिका वन था। जहॉ नन्दबाबा भगवान श्री कृष्ण को लेकर देवी की पूजा करने आये थे। पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास में इसी वन में मंदिर के पास शमी वृक्ष पर अपने अस्त्र-शस्त्र बांध कर छिपाये थे। आगम शास्त्रों मे दस महाविद्याओं की प्रधानता तो स्पष्ट प्रतिपादित है। चामुण्डा तन्त्र में-

'' काली, तारा महाविद्या, शोडशी, भुवनेश्वरी।
भैरवी, छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा।।
बगला, सिद्वविद्या च मातंगी कमलात्मिका।
एतादशा महाविद्याः सिद्वविद्याः पकीर्तिताः।।''

द्वितीय तारा को महाविद्या कहा गया है और इनको '' नील सरस्वती या नीलतारा'' भी माना जाता है जो सिद्वफलप्रदा है। ये दस महाविद्या दशावतारों की शक्तियां भी कही गई हैं। मुण्डमाला तंत्र में कहा गया है-

'' कृष्णरूपा कालिका स्यात रामरूपा च तारिणी।''

तारा रामरूपा शक्ति है और उनके चरणों में भी श्री हनुमान जी है जैसा कि महाविद्या के मंदिर की मूर्ति में है। छत्रपति शिवाजी ने अपने मनोरथ एवं भावी विजय संकल्पों को पूर्ण करने के लिए यहां पूजा अर्चना कर स्वर्ण छत्र चढाया। तंत्र शास्त्र के निष्णात साधक सम्राट दीक्षित एवं उपासक श्री शीलचन्द्र जी महाराज जैसे अनेक साधको ने अम्बिका वन स्थित महाविद्या मंदिर में शक्ति सिद्वि प्राप्त की अतएव यह सिद्व क्षेत्र में है और एक ऐतिहासिक सिद्वपीठ है।

'' ध्यायेत महादेवी सर्वकामार्थ सिद्वये'' निर्गुण तथा सगुणरूपा चिन्मयी पराशक्ति कुलदेवी महाविद्या को कोटिशः नमनः।

'' नमोयस्तु ससतं महाविद्यायै।''

पर्यटन के छोटे-बड़े ठग

- गोपाल चतुर्वेदी, लखनऊ

उन्होंने मेहमान को भगवान मानने की परंपरा में परिवर्तन तो नहीं सुधार किया है। वह मेहमान को श्रद्धा और भक्ति देते हैं। इसके बदले उसे भी तो कुछ देना चाहिए। अगर वह उदार है, तो खुद ब खुद दे देगा। अगर कंजूस है, तो उससे झटकना हमारा धर्म है। खासकर गोरी चमड़ी वाले विदेशी अतिथि तो समृद्धि के शिखर पर हैं। धनवान को इज्जत और सम्मान हम दिल खोल कर देते हैं। वह हमारा प्यारा मेहमान है। भगवान हो ना हो देवतुल्य तो है ही। सौ पचास ज्यादा दे भी देगा तो उसे क्या फर्क पड़ता है। अपने इस प्रकार के समर्थित मैं जवानों के लिए उसका भी तो कुछ कर्तव्य है। ऐसे मेहमान की खातिर तवज्जो एयरपोर्ट से शुरू हो जाती है। गोरों के ग्रुप की आरती उतरती है। चंदन का टीका लगता है। हार माला पहन कर वे गदगद होते हैं। सम्मान करने वाले पूरा ध्यान रखते हैं कि इन्हें सामान्य इंसान से हास्यप्रद कार्टून बनाना है। कोई कोर कसर नहीं रहनी चाहिए। वरना दर्शकों का मनोरंजन कैसे होगा। पर्यटक कौन एजुकेशन के लिए पधारे हैं। वह भी तो मन बहलाने आए हैं।

यदि आरती, टीके, हाथी की सवारी वगैरा-वगैरा से उनका मन बहलता है, तो देखने वालों का भी तो बहले। आजकल सियासत से लेकर साधु सन्यासी तक मनोरंजन योग मंत्र की हैसियत रखता है। पूरा का पूरा वातावरण सुखद और पारस्परिक लेनदेन का है। इसमें राजपथ वालों का बिता भर भी योगदान नहीं है। उनके भाषण, प्रचार और सैद्धांतिक सूत्र वाक्यों को जनपथ वाले एक कान से सुनते और दूसरे कान से निकाल देते हैं। सिद्धांत बघारना हर सरकार की आदत है। वह कहती है कि अतिथि से विनम्रता से पेश आओ। उसे ठगों मत। वह बार बार आया तो मुल्क में खुशहाली लाएगा। उसके मौखिक प्रचार से और आएंगे। वैसे भी मुल्क के इतिहास और संस्कृति का अपना आकर्षण है। बस जरा व्यवहार में सुधार की दरकार है। उसके बाद तो पर्यटकों की ऐसी आंधी आएगी कि गरीबी, अभाव, दरिद्रता सब को उड़ा ले जाएगी।

इसी तरह के सरकारी निर्देशों से प्रभावित होकर एयरपोर्ट से लेकर पांच सितारा होटल तक पर्यटकों के दर्शन प्रदर्शन का दिलफरेब जुलूस निकलता है। होटल पहुंचते ही फूलों की सुगंधित बारिश के बीच वे अंदर जाते हैं। उन्होंने हिंदुस्तानी राजा, नेता, सांप- बिच्छू, साधु-फकीर, चरस-गांजा, जादू टोने के बारे में आने से पहले से सुन रखा है। वह सब का तो नहीं पर कुछ का जरूर मजा लेना चाहते हैं। पर इस गुलाबों की गली से गुजरने का तो किसी ने जिक्र तक नहीं किया था। यह शायद उनके अपने व्यक्तित्व के करिश्मे का कमाल है। टूरिस्ट को मुगालता होता है कि उसके कंधे को चौड़े और कद कुछ ऊंचा हो गया है।

जनपद वाले जानते हैं, सरकार के उसूल की गुहार भाई भाई, पति पत्नी, बाप बेटे के पारस्परिक पारंपरिक प्रेम भरे नाते रिश्ते जैसी मितथ्या, तथ्य हीन और खोखली है। उसे फिल्मी गानों का शौक है। वह गुनगुनाता है- बातें हैं बातों का क्या। सब अपनी लंतरानियाँ हाँकते हैं।

सारी कानून व्यवस्था की बकवास और आम आदमी के साथ सरकार का हाथ होने की बात उस डंडा फटकारते भद्दे अपने सिपाही को पटरी पर छोटे-छोटे कमजोर गठरी वाले दुकानदारों से वसूली करने से नहीं रोक पाती है। बड़ों की बात अलग है उनका सीधा संपर्क प्रशासन के बड़ों से है। छूटभय उन्हें सलाम करते हैं। ऊपर से नीचे तक इस खाउ पीयू व्यवस्था में सबका अपना-अपना टांका है। सब एक दूसरे से सहयोग करते हैं और अपने अपने हित साधन के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। हमें यकीन है कोई कुछ भी कहे अपने निहित दलित के लिए देश को अगड़े पिछड़े और अल्पसंख्यकों में लाख बांटे। देश की संस्कृति एकता को चुनौती दे। गरीबी अमीरी की खाई बढ़ाएं। भारतीयता को दिन रात कोसे। उसका हर का खंड खंड खंड होगा। मुल्क की एकता में दरार डालने की कोई कोशिश कामयाब नहीं होगी। आज देश की अखंडता और एकता की मीनार सर्वव्यापी भ्रष्टाचार

की मजबूत व पुख्ता नींव पर आधारित है। उसे बंटाधार करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है।

जो टूरिस्ट आया है देश के असली सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आस्वाद को चखने में लगा है। वह आगरा के ताजमहल, जयपुर के राजपूत शासकों के शानदार अतीत पर फिदा है। उसने मुगलों का इतिहास पढ़ा है उसे जहांगीर शाहजहां, अकबर के नाम तक याद हो गए हैं। आज उसका फ्री दिन है। वह दिल्ली घूमने निकला है। एक पटरी वाला लोहे, पीतल की घंटियां, घुंघरू लिए बैठा है। उसे वह गोरा जोड़ा आता दिखता है। वह अपने सहायक को चेताता है। जिसका इंतजार था वह आ रहा है। देखो टूरिस्ट टैक्सी वाले का कमीशन बढ़ाने से कितना फायदा है। दरअसल यह मार्केटिंग की नई तकनीक है। जिसका किसी किताब में उल्लेख नहीं है। टैक्सी वाला होटल में कमीशन देकर सवारी पाता है और कमीशन कमाने के लिए अनौपचारिक पटरी वाला गाइड बन जाता है। वह अपनी सवारी को बताता है कि किस पटरी वाले के पास क्या-क्या खास और ऐतिहासिक चीज सस्ती मिलती है। बाजारु संस्कृति की मान्यता है कि यमराज के यमदूत भी तरह तनख्वाह पर काम नहीं करते हैं। वह भी इंसान की जान लेने का निश्चित प्रति आदमी इंसेंटिव पाते हैं।

कभी यमदूत वेतन व्यवस्था के अंतर्गत काम करते थे। धीरे-धीरे उनमें अक्षमता और काहिली आ गई। पता लगा कि प्राण रमेश के लेने थे और सुरेश के परिवार वालों को बिलखते छोड़ गए। यमराज ने समस्या के निदान के लिए यमदूत सुधार आयोग बनाया। उसने कमीशन प्रणाली सुझाई। अगर यमदूत गलती करता है तो सजा के अतिरिक्त उसे फाइंड भी देना पड़ता है। भारत की पुण्य प्रसून धरती पर फिलहाल ऐसा नहीं है। लिहाजा हर किस्म के अधिकारी जनता के लिए यमदूत साबित हो रहे हैं। इतने में पर्यटक जोड़ा पटरी वाले के पास पहुंच चुका था। उसको आते देखकर पटरीवाला अपने कान के पास ले जाकर घंटी हिला हिलाकर बजाने लगा। जैसे जांच कर रहा हो कि उसकी आवाज में कोई खोट तो नहीं है। उसका सहायक दौड़कर जोड़े के पास गया और अंग्रेजी में बोला सर एंटीक बेल। पुरानी तवारीखी घंटियां जो हिंदुस्तान में कहीं और मिलना तो दूर, दिखेंगी तक नहीं। दुकान पर ले जाते जाते उसने घंटी कथा जारी रखी। हमारे पास बनारस के काशी विश्वनाथ से लेकर तिरुपति के बालाजी तक के मंदिरों की मूल घंटियां हैं। उज्जैन के महाकाल और मथुरा के द्वारकाधीश की भी। आप चलें और एक बार सुने आपको महसूस होगा कि आत्मा का सूक्ष्म शरीर सर्वशक्तिमान निर्माता से संवाद कर रहा है। उनकी टूटी-फूटी अंग्रेजी से भी यह जाहिर हो गया कि भौतिकता के संसार में ये घंटियां रूहानी सुकून देने का संदेश देने में सक्षम है। विदेशी भारत की आध्यात्मिक विरासत के बारे में सुन चुका था। उसे चर्च की घंटियों के स्वर में संगीत की अनुभूति होती है। मंदिर की घंटियों के बारे में उसकी जिज्ञासा जगी। वह सपत्नी दुकान की ओर चल पड़ा। पटरी वाले ने उसे आते देख कर मन ही मन टूरिस्ट के ड्राइवर को उसकी मनोवैज्ञानिक सोच के लिए धन्यवाद दिया। उसने सही अनुमान लगाया था कि इस अधेड़ जोड़े के अंतर में कहीं ना कहीं जरूर कोई आध्यात्मिक लोच है। पटरी वाले ने टूरिस्ट को छोटी, मंझोली, बड़ी घंटियां दिखाई। उसने कहा कि इनको जरा कान में धीरे धीरे बजाएं। उससे बड़ी शांति मिलेगी। और उसने प्राइस जाननी चाही तो दुकानदार ने 20 डॉलर से शुरुआत की और ग्राहक को ललचाया। आपके धार्मिक रुझान को देखते हुए आपके लिए विशेष रियायत है। एक घंटी चुनिए और एक फ्री में लीजिए। सौदा पट गया,तो पटरी वाले ने एक कपड़े में लिपटा हुआ घंटा निकाला। यह जहाँगीर का मशहूर घंटा है। जिसे बजाकर याचक इंसाफ की गुहार लगाते थे। और इंसाफ पाते थे। बड़ी मुश्किल से हमने इसे मुगल दरबार से हासिल किया है। कैसे और किस तरह से यह बता कर हम आपका कीमती वक्त बर्बाद नहीं करना चाहते। इसे जो भी देखेगा वह सुरुचि और इतिहास बोध पर आपसे रश्क करेगा। इस करिश्माई घंटे का इतना असर है कि इसको रखने वाला कभी नाइंसाफी की सोच भी नहीं सकता। इसका प्रभाव रखने वाले के चरित्र पर भी पड़ता है। वह जीवन में ना असत्य बोलता है ना बुरा करता है। उसके मन में बस नेक ख्याल आते हैं। हमारा तो अपना अनुभव है। जब से यह घंटा हमारे पास है। हमने शराब पीना और झूठ बोलना छोड़ दिया है। आप इसे अपने पास रख कर देखें आपके हृदय में

तत्काल शुभ और मंगलमय विचारों की तरंगें उठने लगेगी और आपके जीवन की गुणवत्ता में आश्चर्यजनक इजाफा होगा।

अपनी तिजारती तकरीर पर वह खुद ही ताली बजाने वाला था कि टूरिस्ट ने फिर प्राइस की तोता रटन दोहराई। पटरी वाले के चेहरे पर संशय का भाव मंडराया। यह अष्ट धातु का घंटा बेशकीमती है सर। सिर्फ आपके लिए हम इसे माटी के मोल देने को तैयार हैं। बस आप हमें 1000 डॉलर दे दीजिए और यह नायाब घंटा आपका हो गया। घंटा भारी था और उसे लाद कर ले जाना कठिन था। टूरिस्ट पति पत्नी ने असमंजस में एक दूसरे को देखा। पटरी वाले ने उसकी दिक्कत ताड़ी और प्रस्ताव दिया। आप कतई चिंता ना करें। घंटा हम आपके होटल तक पहुंचा देंगे। बस थोड़ा एडवांस दे दे। एडवांस के 100 डॉलर पाकर पटरी वाले की बांछें खिल गई। उसने अपना कार्ड विश्वास जगाने के लिए पर्यटक जुगल को पेश किया और घंटे, घंटियों की गटरी बनाकर पर्यटक को उल्लू बनाने का उत्सव मनाने चल दिया।

उसी पटरी वाले का एक पटरी पड़ोसी कालीन का धंधा करता है। उसे इस सारे नाटक का सुखद अंत देखकर अफसोस हुआ। शाही मुगलों की शान शौकत से अभिभूत पर्यटन को दुकानदार ने घंटा दे दिया। जबकि मुगल कालीनों की कारीगरी के मुल्क के नुमाइंदे थे। वह यह नाइंसाफी कैसे बर्दाश्त करता। पास पड़ोस के रहने वाले की जिंदगी पर खुफिया नजर रखना। हम हिंदुस्तानियों का सेहतमंद शौक है। पटरी वाले और टूरिस्ट की घंटे- घंटी वार्ता के दौरान उसने होटल और टूरिस्ट का नाम जैसे महत्वपूर्ण तथ्य मुंह फेर और कान लगाकर सुन लिए थे। इधर एक पटरी वाला उत्सव मनाने चला तो दूसरा होटल की ओर। उसने रिसेप्शन से पता किया पर्यटक तो अभी लौटा नहीं था। यानी अभी भी वह घूम घूम कर उल्लू बनने की प्रक्रिया में व्यस्त था। उसे डर लगा कहीं कोई दूसरा कालीन वाला इस गांठ के पूरे को ना पकड़ ले। फिर भी उसने हिम्मत न हारी। धैर्य व धीरज से होटल की लॉबी में जम लिया। कभी ना कभी तो शिकार अपने शरण स्थल में लौटेगा ही। उसे लगा कि 18वीं सदी की ठगी आज के मुकाबले आसान रही होगी। ठग किसी रईस मुसाफिर की ताक में रहते। उससे मेलजोल बढ़ाया, दोस्ती गांठी और किसी सुनसान इलाके में लूटपाट कर उसकी लाश वहीं ठिकाने लगा दी। उसकी कार्यविधि में चतुराई, चालाकी कम,हिंसा ज्यादा थी। तब आज के बराबर प्रतियोगिता भी नहीं थी। ठग भी पार्ट टाइम ठग थे। एक फसल काट के पेट पालने के लिए उन्हें कुछ तो करना था। ठगी करने लगे। गाँव के अनपढ़ गरीब किसानों से शहर के पढ़े-लिखे फुल टाइम सफेद पोश ठगों का क्या मुकाबला। तब ठगी की सजा भी बर्बर और भयंकर थी। कोई ठग पकड़ा नहीं कि उसे पेड़ से लटका दिया और चील कौओं के खाने के लिए छोड़ दिया। कालीन वाले ने राहत महसूस की गनीमत है कि आज चोरों और ठगों की जमात है। कामयाब ठगों की वाहवाही है, वरना कौन पेड़ से लटककर सामिष पक्षी समुदाय की खाद्य समस्या का निदान करना चाहेगा।

कहते हैं इंतजार का फल मीठा होता है। ठग चिंतन के दौरान कालीन वाले का शिकार आ टपका। उसने दौड़ कर उससे गुड इवनिंग कह कर अपना परिचय दिया और निवेदन किया सर अगर फ्री हो तो होटल में 1 घंटे के अंदर बेहतरीन कालीनों का नमूना पेश करूं। थकावट के बावजूद पर्यटक थोड़े और बेवकूफ बनने के लिए उत्सुक था। उसने हाँ कहा। कालीन वाला कार से लाल बत्तियां लाँघता घर पहुँचा। उसने अपने बेसमेंट के भंडार से सिर्फ एक छोटा आयताकार कालीन चुना। उसे लादकर व फिर होटल आ धमका। रिसेप्शन से सूचना पाकर पर्यटक अपनी पत्नी के साथ नीचे आया कालीन वाला उसे अपनी गाड़ी तक ले गया। रास्ते में उसने इस ऐतिहासिक कालीन के गुण गाए। जैसा आप जानते हैं सर, मुगल बादशाह फारस से तशरीफ लाए थे। वही कालीन का जन्म स्थान है। यह खास कालीन अकबर ने भारत से मंगवाया था। इसी पर अपनी हिंदू बेगम जोधा बाई के साथ बैठकर उन्होंने दीन ए इलाही जैसे उदार मानवतावादी मजहब की कल्पना की थी। बहादुर शाह जफर के वक्त तक बादशाहत के बुरे दिन आ गए थे। और 1857 के गदर के बाद की लूट खसोट में यह पाक कालीन एक अंग्रेज समर्थक सिपाही ले उड़ा। इसे हमारे वालिद के वालिद ने खरीदा और एक तरह से हमारी खानदानी विरासत की हैसियत रखता है।

हिंदुस्तान जैसे गर्म मुल्क में लोग कालीन का क्या करते हैं, पर्यटक ने जिज्ञासा जताई। सरकार कालीन बड़े काम की चीज है। यह ऊपर चमचमाता रहता है और इसके अंदर बड़प्पन का सारा गंध गुबार छुपा रहता है। कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता कि कालीन के नीचे क्या-क्या कूड़ा करकट है। पर्यटक को कालीन घंटी और घंटे की तरह पसंद आया। उसने फिर प्राइस का प्रश्न उठाया 2000 डॉलर सुनकर उसने चूँ चपड़ नहीं की। बस बोला रुपया चलेगा या डॉलर, कालीन वाले की जैसे किस्मत खुल गई। उसने अदब से सिर झुकाकर डॉलर सर कहा। और बमुश्किल से तमाम खुद को फर्शी लगाने की मुद्रा अपनाने से रोका। उसने घंटी वाले को चारों खाने चित करने पर स्वयं ही अपनी पीठ ठोकी। इसे क्या पता था कि पटरी वाले और उसकी तकदीर एक सी ही है। दोनों में डॉलर पाए और उन्हें रुपए में बदलवाने के चक्कर में जेल की हवा खा आए। डॉलर नकली थे। वह कहते रहे कि उन्होंने घंटी घंटा और कालीन बेचकर यह कमाई करी है। पर तब तक पर्यटक अमेरिका सिधार चुका था। कहते हैं कि बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है। हम तो इतना जानते हैं कि बड़ा ठग छोटे को बख्शता नहीं है। नेता, नेता को खाता है ठग, ठग को। इसलिए कहावत ठग ही जाने ठग की भाषा भी अपना वजूद खो चुकी है। छोटा ठग बड़े की भाषा अगर समझ पाता तो जेल क्यों जाता ?

शाखा सभा

कानपुर

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कानपुर द्वारा कोरोना महामारी के कारण लॉक डाउन कानपुर शहर में 4 दिन 300-300 लंच पैकेट बनवाकर किदवई नगर थाना, सिविल डिफेन्स संस्था और अन्य जरूरतमन्द लोगों को वितरित किये गए। देश सेवा के कार्य में वितरण में विजयजी, प्रवेश जी, संजय जी, आशुतोष जी, अनूप जी, प्रशांत जी, प्रणव जी, प्रभाष जी, अनुराग जी ने सहयोग दिया।

लखनऊ

श्री माथुर चतुर्वेदी मण्डल, लखनऊ ने लखनऊ चतुर्वेदी समाज के सहयोग से एकत्रित राशि रु 55555/= उ0प्र0 सरकार के मंत्री श्री ब्रजेश पाठक के माध्यम से 8 अप्रैल 2020 को मुख्यमंत्री सहायता कोष में कोविड महामारी के सहायतार्थ दी। इस अवसर पर मंण्डल के अध्यक्ष लेखेंद्र जी, मंत्री शिशिर जी, कोषाध्यक्ष पूनम जी साथ ही अजय जी एवं राजीव जी उपस्थित थे।

– **लेखेंद्र नाथ चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

भोपाल

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, शाखा भोपाल कार्यकारिणी सदस्यों ने कोरोनावायरस महामारी से पीड़ित मानवता की सेवार्थ सहयोग करने के विषय पर चर्चा की। सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री केयर फंड में सहयोग करने की आवश्यकता बताई गई। तदाशय की सूचना समाज के वाट्सएप ग्रुप पर पोस्ट की गई।

समाज के कुछ परिवारों ने राशि रू. 21000/- की सहायता की प्रथम किश्त श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, भोपाल के तत्वावधान में प्रधानमंत्री केयर फंड में ट्रांसफर कर प्रेषित की। प्रधानमंत्री केयर फंड में सहयोग का उद्देश्य यह है कि इस फंड से सरकार प्राकृतिक आपदा, बाढ़, सूखा, भूकम्प, बीमारी के अतिरिक्त चिकित्सा हेतु आधारभूत संरचनाओं, चिकित्सकीय अनुसंधान कार्यों में भी करेंगी जबकि प्रधानमंत्री राहत कोष में यह प्रावधान नही है। शाखा सभा भोपाल द्वारा दिए गए सहयोग के अतिरिक्त समाज के अन्य बंधुओं ने व्यक्तिगत रूप से लगभग 1,50,000/- का सहयोग किया है। शाखा सभा भोपाल चतुर्वेदी समाज के बंधुओं डॉ. दिवाकर नाथ जी, जगदीश जी (कछपुरा), ब्रजेश जी, सुरेन्द्र जी, प्रभातजी (पुरा), ललित जी, सुभाष जी, श्रीमती रश्मि जी,अम्बर जी, बीनू जी, श्रीमती शारदा जगदीश जी, श्रीमती अलका जी, श्रीमती चित्रा दिलीप जी, श्रीमती शिवांगी शशांक जी, समर्थ जी, कु. शिविका, मा. शिवांक की आभारी है और अभिनंदन करती है। साथ ही भोपाल सभा भोपाल चतुर्वेदी समाज का भी आभार व्यक्त करती जिन्होंने इस विपदा की घड़ी में देश सेवा में अपना योगदान किया।

– **सुरेन्द्र चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

गुरुग्राम

दिनांक 26/04/2020 को ज़ूम ऐप पर गुरुग्राम सभा ने कार्यकारिणी की बैठक ओनलाइन आहूत की। जिसमें करोना वाइरस जैसी महा मारी के कारण होली मिलन स्थगित कर दिया गया था। जिस कारण निर्वाचित अध्यक्ष श्री मनोरंजन जी का पदभार ग्रहण कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा था। आज डिजिटल बैठक में वह कार्य पूर्ण किया गया। सभी सदस्यों ने नए अध्यक्ष श्री मनोरंज जी को सर्व सहमति से चुने जाने पर बधाई दी। मनोज जी द्वारा पूरे कार्यकाल का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया। जिसे सभी सदस्यों ने ध्वनी मत से पास कर दिया। पंकज जी द्वारा सभी कार्यकारणी सदस्यों का आभार ब्यक्त किया और श्री मनोरंजन जी को अध्यक्ष पद का पदभार ग्रहण कराया। डिजिटल बैठक में पंकज जी, मनोरंजन जी, अखिलेश जी, मनोज जी, सुभाष जी, अनुराग जी, नीलकान्त जी, अभय बिट्टू भाई साहब, राजेश जी, प्रणव जी, अभय राज जी, श्रीमती पूनम जी, श्रीमती शिप्रा जी, श्रीमती नीतिका चतुर्वेदी।

– **अभय राज चतुर्वेदी,** सचिव

समाज समाचार

* डा0 सुजीत सुपुत्र श्री उमेश चंद्र जी (मैनपुरी /बारांबकी) निदेशक टी आर सी शिक्षा संस्थान ने मुख्यमंत्री सहायता कोष में संस्था की तरफ से भी रु. एक लाख कोविड महामारी सहायतार्थ दिये।

---

* लखनऊ मंण्डल के पूर्व मंत्री एवं महासभा कार्यकारिणी सदस्य विपिन जी एवं पंकज जी ने कई दिन गरीबो के बीच भोजन वितरण किया ।

---

* महासभा कार्यकारिणी सदस्य दिलीप सिकंदरपुरिया ने लखनऊ नगर निगम जोन 2 कम्युनिटी किचिन मे अन्न दान किया।

---

* चि. प्रखर सुपुत्र प्रदीप चतुर्वेदी (मैनपुरी/रांची) का शुभविवाह सौ. अंजली सुपुत्री श्री अखिलेश चतुर्वेदी (करेंटी/गुरुग्राम) के साथ 26 जनवरी 2020 को गुरुग्राम में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदीप जी ने महासभा सहायतार्थ 1100 रुपये व पत्रिका सहायतार्थ 1100 रुपये प्रदान किये । बधाई। (र.क्र. 11402)

---

* श्री निखिल चतुर्वेदी (नोएडा/ जापान) द्वारा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 24000/- रूपये प्रदान किए। (र.क्र.11701)

---

* चि. देव पुत्र सुमेध एवं देविका सुपौत्र गणेश एवं सुनीला के मुण्डन संस्कार एवं प्रथम जन्मदिवस पर बड़े बाबा दादी रमेश जी व ऊषा जी सिलवासा ने अन्नपूर्णा योजना हेतु रु० 24000/- महासभा को दिए। बधाई। (र.क्र.11702)

---

*चि.चेतन सुपुत्र स्व. खगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (मैनपुरी) का शुभविवाह सौ. गुंजन सुपुत्री श्री जयंत चतुर्वेदी (इटावा/लखनऊ) के साथ 7 फरवरी 2020 को लखनऊ में सम्पन हुआ। इस अवसर पर आपके बड़े भाई नीरज जी ने 1100 रु महासभा सहायतार्थ व 1100 पत्रिका सहायतार्थ प्रदान किये व सौ. गुंजन को महासभा का आजीवन सदस्यता दिलवायी। बधाई। (र.क्र. 11403)

---

* श्री मदन चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता), संरक्षक महासभा ने (कोविड-19)कोरोना नामक आपदा सहायतार्थ पीएम केयर फंड में एक लाख रुपए प्रदान किए।

* चि. मयंक रावत सुपुत्र श्रीमती सीमा एवं गोपेश रावत (अनूप शहर/ कोटा) का शुभ विवाह सौ. मणिका सुपुत्री श्रीमती उषा चतुर्वेदी एवं स्व. श्री ऋषिकांत चतुर्वेदी (कछपुरा/ ग्वालियर) के साथ दिनाँक 31 जनवरी 2020 को कोटा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 501 रुपये प्रदान किए। बधाई।

(र.क्र. 11685)

---

* चि. रचित सुपौत्र स्व. श्रीमती दमयंती एवं स्व. श्री बालस्वरूप चतुर्वेदी सुपुत्र श्रीमती सुनंदा एवं श्री कमलेश चंद्र चतुर्वेदी (मथुरा /झांसी) का शुभ विवाह सौ. रम्या सुपुत्री श्रीमती ज्योति एवं श्री रंजन चतुर्वेदी (मथुरा/आगरा) के साथ दिनाँक 26 फरवरी 2020 को आगरा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आपने रुपये 1100/- महासभा सहायतार्थ व रुपये 1100/- पत्रिका सहायतार्थ प्रदान किये। बधाई।

(र.क्र.11397)

---

* चि. मनी सुपौत्र स्व. श्री जयनारायण चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती सरस्वती देवी चतुर्वेदी सुपुत्र श्री अजीत चतुर्वेदी एवं श्रीमती वन्दना चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) का शुभ विवाह सौ.अंकिता सुपुत्री स्व.श्री राकेश चतुर्वेदी एवं श्रीमती सुमति चतुर्वेदी (ग्वालियर) के साथ दिनाँक 18 जनवरी 2020 को आगरा में सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 2100/- प्रदान किये। बधाई।

(र. क्र. 11401)

राम

पहले उसे छला गया
फिर भी वो वन चला गया
एक वचन की लाज रखने
भाई के सर ताज रखने
माँ की ममता छोड़ कर के
सारे बंधन तोड़ कर के
अब कहानी की तरह कहना सरल है,
सत्य किंतु जानते हैं हम सभी
निष्काम रहना कितना कठिन है
राम पर लिखना कठिन है

न लालसा वैभव की उनको
थी न सत्ता की पिपासा
रखा ठोकर पे सिंघासन
और पिता को दी दिलासा
जानते थे वे प्रभु हैं
और वैभव सारे लघु हैं
किंतु सोचो तुम तनिक ये
अवतार ले कर मानवों में
आम रहना कितना कठिन है
राम पर लिखना कठिन है
वो सुखा सकते थे सागर

फिर भी उन्होंने हाथ जोड़े
लंका खुद ही जीत लेते
फिर भी वानर साथ जोड़े
राम हो जब दुख ही देखो?
सोच कर तुम खुद ही देखो
पास हो जब सारी शक्ति
और तुम्हारी होती हो भक्ति
काम करना कितना कठिन है
राम पर लिखना कठिन है

– **सौरभ चतुर्वेदी,**
सारांश, लखनऊ

दिवंगत स्वजन

* श्री उपेंद्र नाथ चतुर्वेदी, छून्नौ (मैनपुरी/रिषड़ा) का स्वर्गवास दिनाँक 24 मार्च 2020 को हो रिषडा में हो गया।

***

* श्री राजीव चतुर्वेदी (विल्सन) पुत्र स्वर्गीय श्री प्रकाश चंद चतुर्वेदी (हिंडौन/जयपुर) का स्वर्गवास दिनांक 23/03/2020 को जयपुर में हो गया।

***

* श्री कमलकांत चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. खरगजीत चतुर्वेदी (होलीपुरा/ ललितपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 24/03/2020 को ललितपुर में हो गया।

***

* श्री अजेंद्र नाथ (नागदा/ इंदौर) पुत्र स्व० श्री सुरेंद्र नाथ पांडे (होलीपुरा) का स्वर्गवास दिनाँक 10.04.20 को लगभग 70 वर्ष की आयु में हैदराबाद हो गया।

***

* श्री अशोक चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री महेश चंद्र चतुर्वेदी (आगरा) का असामयिक स्वर्गवास दिनाँक 11 अप्रैल 2020 को लगभग 55 वर्ष की आयु में देहली में हो गया।

***

* श्रीमती उर्मिला चतुर्वेदी पत्नी स्व.गिरीश चन्द चतुर्वेदी (कछपुरा/नोयडा/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 18 अप्रैल 2020 को नोएडा में हो गया।

***

* श्री मेवा राम चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री ब्रह्मदत्त चतुर्वेदी (चंद्रपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास लगभग 85 वर्ष की आयु में दिनाँक 22 अप्रैल 2020 को होलीपुरा में हो गया।

***

* श्री ऋषिकेश चतुर्वेदी (मैनपुरी/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 23 अप्रैल 2020 को लखनऊ में हो गया।

***

* श्रीमती कलावती चतुर्वेदी पत्नि स्वर्गीय उमा नंदन चतुर्वेदी (कोटा) का स्वर्गवास दिनांक 19 अप्रैल 2020 को कोटा में हो गया।

***

* श्री सूर्यकान्त चतुर्वेदी, कौशलजी सुपुत्र स्व.श्याम बिहारी, मुखियाजी (सिकंदरपुर/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 24 अप्रैल 2020 को 78 वर्ष की आयु में लखनऊ में हो गया।

***

* श्री योगेश कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्व. भोजराज चतुर्वेदी (तरसोखर /कासगंज) का स्वर्गवास दिनाँक 29 अप्रैल 2020 को आगरा में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।